त्रिभुवन विश्वविद्यालय

सेमेस्टर प्रणाली अन्तर्गत तैयार किया गया पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर केन्द्रीय हिन्दी विभाग

कीर्तिपुर

डीन कार्यालय

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय

त्रि. वि. कीर्तिपुर के लिए प्रस्तुत पाठ्यक्रम

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

२०८१

पाठ्यक्रम विवरणिका

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर प्रणाली (सत्रार्ध प्रणाली) आधारित

दो वर्षीय पाठ्यक्रम २०८१

संबद्धता

हिन्दी केन्द्रीय विभाग द्वारा तैयार किया गया यह पाठ्यक्रम त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर के लिए होगा ।

परिचयात्मक विवरण

सेमेस्टर प्रणाली (सत्रार्ध प्रणाली) को ध्यान में रखते हुए इस नूतन पाठ्यक्रम को आज के परिप्रेक्षय में समग्र रूप में समझ कर ज्ञानार्जन करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है । भाषा विकास की दृष्टि से हिंदी विश्व की प्रमुख उन्नत भाषाओं में से एक है । इस भाषा का प्रयोग क्षेत्र विश्व के भाषिक भूगोल में अत्यंत व्यापक और महत्वपूर्ण स्थान रखता है । इसकी महत्ता को समझते हुए पाठ्यक्रम में हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक विस्तार, व्याकरणिक स्वरुप जैसे पक्षों को विस्तार के साथ शामिल किया गया है ।

हिंदी का साहित्य जितना उन्नत रहा है, वर्तमान साहित्य उसकी दिनानुदिन होनेवाली प्रगति का भी सूचक है । हिंदी साहित्य के सम्पूर्ण साहित्य से छात्र परिचित हों इस वात को ध्यान में रखते हुए आदिकाल मध्यकाल, रीतिकाल तथा आधुनिककाल की सम्पूर्ण विद्याओं का इस पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है ।

आलोचना किसी वस्तु या विषय की, उसके लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, उसके गुण दोषों एवं उपयुक्तता का विवेचना करनेवाली साहित्यिक विधा है । साहित्यकार जीवन और अनुभव को जिन तत्वों के संश्लेषण से साहित्य रचना करता है, आलोचना उन्हीं तत्वों का विश्लेषण करती है । साहित्य में जहां रागतत्व प्रधान है वहां आलोचना में वुद्धितत्व । आलोचना ऐतिहासिक, सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों का भी आकलन करती है और साहित्य पर उनके पड़ने वाले प्रभावों की विवेचना करती है । आज के सन्दर्भ में आलोचना की आवश्यकता और इसकी महत्ता दोनों ही महसूस की जा रही है, इसलिए आलोचना साहित्य को प्रमुखता के साथ पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है ।

आधुनिक शिक्षा विधान के क्षेत्र में तुलनात्मक साहित्य मानवीय, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय सम्वन्धों को गहनतर वनाने का वेहतरीन साधन है । वर्तमान में देखा जा रहा है कि तुलनात्मक साहित्य के जरिए हम न केवल भिन्न - भिन्न भाषा, साहित्य, जनपद की संस्कृति से परिचित होते हैं, वल्कि इस रास्ते हम अपनी चेतना को मूल्य और राजनयिक सम्वन्धों को अनुरागमय वनाने के सूत्र भी तलाशते हैं । इसी यथार्थता को ध्यान में रखते हुए तुलनात्मक साहित्य को भी पाठ्यक्रम में रखा गया है ।

आज के सन्दर्भ में अनुवाद की आवश्यकता और इसकी महत्त्व दोनों ही महसूस की जा रही हैं, इसीलिए अनुवाद : सिद्धान्त और प्रयोग को भी प्रमुखता के साथ पाठ्यक्रम में रखा गया है । इसके अतिरिक्त संचार और प्रौयोगिकी क्रांति के इस युग में छात्रों की दक्षता पत्रकारिता में हों इस बात को ध्यान में रखते हुए पत्रकारिता को अनिवार्य पत्रों में शामिल किया गया है ।

आधुनिक युग में प्रयोजनमूलक हिंदी के महत्त्व व प्रासंगिकता से हम अनाभिज्ञ नहीं हैं । राजनीतिक, शिक्षा, कार्यालय, व्यवसाय, संचार के क्षेत्र व समाज आदि सभी जगह प्रयोजनमूलक हिंदी की महत्ता बढ़ती जा रही है । छात्रों के कर्मक्षेत्र सम्बन्धी कार्यक्षमता को बढ़ाने हेतु प्रयोजनमूलक हिंदी को भी पाठ्यक्रम में प्रमुखता के साथ जगह दी गई है ।

पूर्वीय और पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त, भाषाविज्ञान, संस्कृत साहित्य का इतिहास के अतिरिक्त नेपाल का हिंदी साहित्य और प्रवासी हिंदी साहित्य का इतिहास को भी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत रखा गया है । स्नातकोत्तर के छात्रों को अनुसंधान प्रविधि का ज्ञान आवश्यक जानकर शोध प्रविधि और शोध दर्शन को अनिवार्य पत्र के अन्तर्गत रखा गया है । इसी प्रकार लोक साहित्य, समकालीन साहित्य एवं सृजनात्मक लेखन ऐच्छिक पत्र के रूप में रखा गया है । जिनमें से किसी एक का अध्ययन छात्र कर सकेंगे ।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- हिंदी भाषा से जुड़ी जानकारी देना ।
- हिंदी साहित्य का इतिहास, उद्‌भव एवं विकास और प्रवृत्तियों का विश्लेषण तथा मूल्यांकन के प्रति अभिरुचि निर्माण करना ।
- साहित्यिक प्रवृत्तियों के संदर्भ में विभिन्न साहित्यक विद्याओं के विकासक्रम का परिचय देना ।
- हिंदी साहित्य की प्राचीन व आधुनिक गद्य, पद्य विद्याओं का तात्विक विवेचन करना ।
- छात्रों में साहित्य को समझने, उसका आस्वादन करने तथा मूल्यांकन करने की दृष्टि बढाना ।
- भाषाविज्ञान, अनुवाद, पत्रकारिता, प्रयोजनमूलक हिंदी, अनुसंधान तथा आलोचना प्रणालियों आदि विषय के अध्ययन के लिए छात्रों को प्रोत्साहन देना ।
- छात्रों को जनसंचार एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया में हिंदी की उपादेयता तथा सूचना प्रौद्योगिकी के नए क्षेत्र में हिंदी की विकास यात्रा की जानकारी देकर उनमें अभिरुचि निर्माण करना ।
- छात्रों को सचेत नागरिक बनाने के साथ-साथ एक कुशल वक्ता का भी निर्माण करना ।
- समाज, समुदाय तथा राष्ट्र के प्रति संवेदनशील दृष्टि का विकास करना ।

शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया

- कक्षा व्याख्यान
- सामूहिक चर्चा/प्रश्नोत्तर विधि
- काव्य वाचन, पठन और आलोचनात्मक मूल्यांकन

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

विद्यार्थियों के लिए न्यूनतम प्रवेश योग्यता

सेमेस्टर प्रणाली के साथ ही हिंदी केन्द्रीय विभाग में नामांकन खुला किया गया है । किसी भी ऐसे विश्वविद्यालय, जिन्हें त्रिभुवन विश्वविद्यालय में मान्यता प्राप्त है, के छात्र हिंदी केन्द्रीय विभाग में नामांकन हेतु आवेदन कर सकते हैं । छात्र को स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण करना आवश्यक होगा । साथ ही स्नातकोत्तर हिंदी केन्द्रीय विभाग में नामांकन हेतु छात्र की योग्यता परीक्षा हेतु १०० पूर्णांक की प्रवेश परीक्षा ली जाएगी, जिनमें साहित्य सम्वन्धी सामान्य प्रश्न पूछे जाएंगे । प्रश्नों का प्रारुप होगा सही चिन्ह लगाना ।

विशेष जानकारी हेतु

स्नातकोत्तर हिंदी पाठ्यक्रम को चार सेमेस्टर के लिए तैयार किया गया है । प्रत्येक सेमेस्टर के अन्तर्गत पांच पत्र निर्धारित किए गए हैं । सभी पत्रों को अध्ययन की दृष्टि से चार-चार इकाइयों में बाँटा गया है । चतुर्थ सेमेस्टर के तृतीय पत्र में ऐच्छिक विषय के रूप में लोक साहित्य, समकालीन साहित्य एवं सृजनात्मक लेखन का समावेश किया गया है । छात्र अपनी पसंद और अध्यापकों के निर्णय के आधार पर किसी एक विषय का चयन कर सकते हैं । चतुर्थ सेमेस्टर में चार पत्र विषय से सम्वन्धित है । पंचम पत्र के रूप में शोधपत्र है जो सभी छात्रों के लिए अनिवार्य है ।

परीक्षा योजना

- प्रत्येक सेमेस्टर (सत्रार्ध) के अंत में लिखित परीक्षा (वाह्य परीक्षा) होगी । परीक्षा की अवधि ३ घंटे की होगी । प्रत्येक प्रश्नपत्र के पूर्णांक ६० होंगे ।
- ४० अंकों के लिए हिंदी कन्द्रीय विभाग द्वारा आन्तरिक परीक्षा ली जाएगी । आन्तरिक मूल्यांकन प्रत्येक सेमेस्टर में हर प्रश्नपत्र के लिए होगा ।

आंतरिक परीक्षा मूल्यांकन का अंक विभाजन

- परियोजना कार्य - २०
- आंतरिक परीक्षा - १०
- कक्षा उपस्थिति - ५
- पत्र प्रस्तुति - ५

प्रश्नपत्र निर्माण योजना

वाह्य परीक्षा के लिए तैयार प्रश्नपत्र में दो खंड होंगे- खंड 'क' एवं खंड 'ख'

- खंड 'क' से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे । इसमे प्रश्नों की संख्या ३ होंगी जिनमें किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर परीक्षार्थियों को देने होंगे । जिनके प्राप्तकं २ x १० = २० होंगे ।
- खंड 'ख' से १० प्रश्न होंगे जिनमें से किन्हीं ८ प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य रूप से परीक्षार्थियों को देने होंगे । अन्तिम प्रश्न में ३ टिप्पणी के प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से दो के उत्तर देने होंगे,

दोनों के प्राप्तांक मिलाकर ५ होंगे । सभी प्रश्नों के प्राप्तांक ५/५ नम्वर होंगे अर्थात् ८ x ५ = ४० होंगे ।

- प्रश्नपत्र में पाठ्यक्रम के सभी इकाई से प्रश्न लिए जाएंगे ।

पाठ्यक्रम के परिणाम

- भाषा के सैद्धान्तिक रूप के साथ-साथ व्यावहारिक पक्ष को भी जाना जा सकेगा ।
- छात्र हिंदी भाषा को सीखने की प्रक्रिया में भाषागत मूल्यों को व्यावहारिक रूप से भी जान सकेंगे ।
- साहित्य के माध्यम से सौन्दर्यवोध, नैतिकता, पर्यावरण और सामाजिक समरसता संवंधी विषयों की समझ विकसित होगी ।
- साहित्य की विद्याओं के माध्यम से विद्यार्थी की रचनात्मकता को दिशा, कविता, कहानी, निवंध, और नाटक जैसी विद्याओं द्वारा विद्यार्थी की रचनात्मकता को प्रोत्साहित किया जा सकेगा ।
- व्यावसायिक क्षमता को वढावा देने के लिए भाषा, अनुवाद, प्रयोजनमूलक हिंदी, पत्रकारिता तथा तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी जैसे विषयों को हिंदी से जोड़कर पढ़ाना जिससे बाजार के लिए आवश्यक योग्यता का भी विकास किया जा सकेगा ।

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

सेमेस्टर प्रणाली अन्तर्गत तैयार किए गए स्नातकोत्तर तह के हिन्दी विषय का पाठ्यसंरचना

प्रथम सेमेस्टर

क्र.सं.	संकेतांक	पत्र	विषय	क्रेडिट आवर	पाठ घन्टा
१.	हि ५०१ (HIN 501)	प्रथम पत्र	हिन्दी भाषा	३	४८ घन्टा
२.	हि ५०२ (HIN 502)	द्वितीय पत्र	आदिकाल	३	४८ घन्टा
३.	हि ५०३ (HIN 503)	तृतीय पत्र	भक्तिकाल	३	४८ घन्टा
४.	हि ५०४ (HIN 504)	चतुर्थ पत्र	रीतिकाल	३	४८ घन्टा
५.	हि ५०५ (HIN 505)	पंचम पत्र	आधुनिक काल	३	४८ घन्टा

द्वितीय सेमेस्टर

क्र.सं.	संकेतांक	पत्र	विषय	क्रेडिट आवर	पाठ घन्टा
१.	हि ५५१ (HIN 551)	प्रथम पत्र	हिन्दी साहित्य की विधाएँ	३	४८ घन्टा
२.	हि ५५२ (HIN 552)	द्वितीय पत्र	आधुनिककालीन गद्य एवं पद्य साहित्य	३	४८ घन्टा
३.	हि ५५३ (HIN 553)	तृतीय पत्र	आलोचना साहित्य	३	४८ घन्टा
४.	हि ५५४ (HIN 554)	चतुर्थ पत्र	निबंध, नाटक एवं अन्य साहित्य	३	४८ घन्टा
५.	हि. ५५५ (HIN 555)	पंचम पत्र	तुलनात्मक साहित्य	३	४८ घन्टा

तृतीय सेमेस्टर

क्र.सं.	संकेतांक	पत्र	विषय	क्रेडिट आवर	पाठ घन्टा
१.	हि ६०१ (HIN 601)	प्रथम पत्र	पूर्वीय और पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त	३	४८ घन्टा
२.	हि ६०२ (HIN 602)	द्वितीय पत्र	भाषा विज्ञान	३	४८ घन्टा
३.	हि ६०३ (HIN 603)	तृतीय पत्र	प्रयोजनमूलक हिंदी	३	४८ घन्टा
४.	हि ६०४ (HIN 604)	चतुर्थ पत्र	अनुवाद : सिद्धान्त और प्रयोग	३	४८ घन्टा
५.	हि ६०४ (HIN 604)	पंचम पत्र	पत्रकारिता	३	४८ घन्टा

चतुर्थ सेमेस्टर

क्र.सं.	संकेतांक	पत्र	विषय	क्रेडिट आवर	पाठ घन्टा
१.	हि ६५१ (HIN 651)	प्रथम पत्र	संस्कृत साहित्य	३	४८ घन्टा
२.	हि ६५२ (HIN 652)	द्वितीय पत्र	नेपाल का हिन्दी साहित्य एवं प्रवासी साहित्य	३	४८ घन्टा
३.	हि ६५३-१(HIN 653-1)	तृतीय पत्र	समकालीन साहित्य (ऐच्छिक पत्र)	३	४८ घन्टा
४.	हि ६५३-२(HIN 653-2)	तृतीय पत्र	लोक साहित्य (ऐच्छिक पत्र)	३	४८ घन्टा
५.	हि ६५३-३(HIN 653-3)	तृतीय पत्र	सृजनात्मक लेखन (ऐच्छिक पत्र)	३	४८ घन्टा
६.	हि ६५४ (HIN 654)	चतुर्थ पत्र	शोध दर्शन और शोध प्रविधि	३	४८ घन्टा
७.	हि ६५५ (HIN 655)	पंचम पत्र	अनुसंधान	६	९६ घन्टा

प्रथम सेमेस्टर

प्रथम पत्र

हिन्दी भाषा

संकेतांक हि ५०१ (HIN 501)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय हिन्दी भाषा	क्रेडिक आवर ३	पाठ घण्टा ४८	बाह्य परीक्षा समय : ३ घण्टा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	**हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :** हिंदी शब्द की व्युत्पत्ति एवं विकास, विशेष भाषा के अर्थ में हिंदी, हिंदी नागरी अर्थ में, प्राचीन आर्य भाषा, मध्यकालीन आर्य भाषाएं, आधुनिक आर्य भाषाएं		१४			
इकाई २ Unit 2	**हिंदी का भौगोलिक विस्तार :** हिंदी की उपभाषाएं, क्षेत्रीय बोलियां एवं क्षेत्रीय बोलियों का विकास		८			
इकाई ३ Unit 3	**हिंदी का व्याकरणिक स्वरूप :** हिंदी ध्वनियां, हिंदी शब्द रचना, वाक्य भेंदु, वर्तनी, विरामादि चिन्हों के प्रयोग		१२			
इकाई ४ Unit 4	**हिंदी भाषा प्रयोग के विविध रूप :** बोलचाल की भाषा, मानक भाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, देवनागरी लिपि का उद्भव और विकास, मानक हिंदी		१४			

प्रथम सेमेस्टर

द्वितीय पत्र

आदिकाल

संकेतांक हि ५०२ (HIN 502)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय:आदिकाल	क्रेडिट ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा, काल विभाजन, नामकरण की समस्या		११			
इकाई २ Unit 2	आदिकाल का परिचय, परिवेश, परिस्थिति एवं विशेषताएँ		११			
इकाई ३ Unit 3	आादिकालीन धार्मिक एवं धर्मेतर साहित्य		१८			
इकाई ४ Unit 4	आदिकालीन साहित्य की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक उपलब्धि,हिन्दी साहित्य में आदिकाल का योगदान		०८			

प्रथम सेमेस्टर

तृतीय पत्र

भक्तिकाल

संकेतांक हि ५०३ (HIN 503)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा- ४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई / Unit	विषय भक्तिकाल	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	भक्तिकाल का परिचय, परिवेश, परिस्थितियाँ एवं विशेषताएँ।		०८			
इकाई २ Unit 2	भक्तिकालीन काव्य की धाराएँ और प्रमुख कवि तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, जायसी।		१२			
इकाई ३ Unit 3	रामचरित मानस, सुरसागर(भ्रमरगीत सार),कबीर ग्रंथावली, जायसी पदावली		१८			
इकाई ४ Unit 4	भक्तिकालीन अन्य कवि एवं उनकी रचनाएँ, मीराबाई, सहजो बाई, दया बाई, रैदास एवं महामति प्राणनाथ संक्षिप्त परिचय एवं रचनाएँ।		१०			

प्रथम सेमेस्टर

चतुर्थ पत्र

रीतिकाल

संकेतांक हि ५०४ (HIN 504)

क्रेडिट आवर- ३

पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय रीतिकाल	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंट	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	रीतिकाल की अवधारणा, परिचय, परिवेश, परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ/विशेषताएँ		१५			
इकाई २ Unit 2	रीतिकाल की प्रमुख धाराएँ, रीतिवद्ध, रीतिमुक्त एवं रीतिसिद्ध का परिचय एवं रीतिवद्ध, रीतिमुक्त एवं रीतिसिद्ध कवियों का परिचय।		१८			
इकाई ३ Unit 3	रीतिकालीन प्रतिनिधि कवि एवं उनकी कृतियाँ। रीतिवद्ध–केशवदास, चिंतामणि रीतिमुक्त –विहारी, वृन्दावन रीतिसिद्ध–घनानन्द, वोधा		५			
इकाई ४ Unit 4	रीतिकालीन गद्य साहित्य(व्रजभाषा गद्य साहित्य, खड़ी बोली गद्य साहित्य, दक्खिनी गद्य साहित्य, राजस्थानी गद्य साहित्य, भोजपुरी एवं अवधी गद्य साहित्य। रीतिकाल की उपलब्धियाँ।					

प्रथम सेमेस्टर

पंचम पत्र

आधुनिक काल

संकेतांक हि ५०५ (HIN 505)

क्रेडिट आवर- ३

पाठ घंटा- ४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय : आधुनिक काल	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	आधुनिक काल का उद्‌भव, विकास, परिवेश, परिस्थिति एवं प्रवृत्ति/विशेषताएँ		१०			
इकाई २ Unit 2	भारतेन्दु युग एवं द्विवेदी युग का परिचय, गद्य एवं पद्य का विकास क्रम		१२			
इकाई ३ Unit 3	शुक्ल युग एवं प्रेमचंद युग का परिचय, गद्य एवं पद्य का विकास क्रम		११			
इकाई४ Unit 4	छायावाद, रहस्यवाद,प्रयोगवाद एवं प्रगतिवाद का परिचय		१५			

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

द्वितीय सेमेस्टर

प्रथम पत्र

हिन्दी साहित्य की विधाएँ

संकेतांक हि ५५१ (HIN 551)

कुल क्रेडिट आवर- ३

पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय हिन्दी साहित्य की विधाएँ	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	नाटक,एकांकी,एवं उपन्यास–परिचय परिभाषा एवं विकासक्रम		१२			
इकाई २ Unit 2	निवंध,कहानी एवं आत्मकथा –परिचय परिभाषा एवं विकासक्रम		१२			
इकाई ३ Unit 3	जीवनी, यात्रा वृतांत एवं रेखाचित्र–परिचय परिभाषा एवं विकासक्रम		१२			
इकाई ४ Unit 4	संस्मरण एवं कविता–परिचय, परिभाषा एवं विकासक्रम तथा कविता के प्रकार		१२			

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

द्वितीय पत्र

आधुनिककालीन गद्य एवं पद्य साहित्य

संकेतांक हि ५५२ **(HIN 552)**

कुल क्रेडिट आवर- ३

पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय आधुनिककालीन गद्य एवं पद्य साहित्य	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	भारतेन्दु एवं द्विवेदीयुगीन (गद्य)–भारतेन्दु, किशोरीलाल गोस्वामी,वालकृष्ण भट्ट,चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, विश्वम्भरनाथ शर्मा		११			
इकाई २ Unit 2	शुक्ल एवं प्रेमचंदयुगीन(गद्य) रामचन्द्र शुक्ल, भगवतीचरण वर्मा, प्रेमचंद, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क		११			
इकाई ३ Unit 3	छायावाद एवं रहस्यवाद (पद्य) जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा		११			
इकाई ४ Unit 4	प्रयोगवाद एवं प्रगतिवाद (पद्य) सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, भारतभूषण, प्रभाकर माचवे, नागार्जुन, धुमिल, कात्यायनी, अनामिका		१५			

द्वितीय सेमेस्टर

तृतीय पत्र

आलोचना साहित्य

संकेतांक हि ५५३ (HIN 553)

कुल क्रेडिट आवर-३

पाठ घंटा ४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय हिन्दी साहित्य का आलोचना साहित्य	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास		१२			
इकाई २ Unit 2	हिन्दी आलोचना का द्विवेदी एवं शुक्लयुगीन आलोचक		१२			
इकाई ३ Unit 3	समकालीन हिन्दी आलोचना एवं आलोचक		१२			
इकाई ४ Unit 4	प्रमुख आलोचकों की रचनाएँ आलोचक एवं आलोचना दृष्टि		१२			

द्वितीय सेमेस्टर

चतुर्थ पत्र

निबंध, नाटक एवं अन्य साहित्य

संकेतांक हि ५५४ (HIN 554)

कुल क्रेडिट आवर -३
पाठ घंटा- ४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय निबंध, नाटक एवं अन्य साहित्य	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	निबंध रामचन्द्र शुक्ल(उत्साह), हजारी प्रसाद द्विवेदी(क्या निराश हुआ जाय), प्रेमचंद(साहित्य क्या है) के निबंध		१२			
इकाई २ Unit 2	नाटक : मृणाल पाण्डेय(आदमी जो मछुवारा नहीं था) एवं भीष्म साहनी(हानुस) के नाटक		१२			
इकाई ३ Unit 3	रेखाचित्र : रामवृक्ष वेनीपुरी(गेहूँ और गुलाव), महादेवी वर्मा (रामा)		१०			
इकाई ४ Unit 4	संस्मरण : नरेन्द्र कोहली(स्मृतियों के गलियारे से : मुखौटा और मन) ममता कालिया (कल परसों के वरसों : पहाड़ जिन पर टूटता ही रहा एवं शहर को गाँव की चुनौती) यात्रा वृतांत : रमेश पोखरियाल निशंक (एक दिन नेपाल में : नेपाल में विभिन्न जाति समुदाय एवं आस्था के आधार स्तम्भ)		१४			

द्वितीय सेमेस्टर

पंचम पत्र

तुलनात्मक साहित्य

संकेतांक हि ५५५ (HIN 555)

कुल क्रेडिट आवर -३

पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय तुलनात्मक साहित्य	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय : ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	तुलनात्मक साहित्य की अवधारणा, परिभाषा, स्वरूप और पद्धति		१२			
इकाई २ Unit 2	तुलनात्मक साहित्य का इतिहास, विशेषता और महत्त्व		१०			
इकाई ३ Unit 3	तुलनात्मक साहित्य सांस्कृतिक कार्य		११			
इकाई ४ Unit 4	हिन्दी नेपाली का तुलनात्मक साहित्य अध्ययन (विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला एवं इलाचंद जोशी की कहानियों के परिप्रेक्ष्य में)		१५			

तृतीय सेमेस्टर

प्रथम पत्र

पूर्वीय और पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त

संकेतांक हि ६०१ (HIN 601)

क्रेडिट आवर -३

पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय पूर्वीय और पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	काव्य के लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, रस सिद्धान्त, ध्वनि एवं अलंकार सिद्धान्त		१३			
इकाई २ Unit 2	रीति,वक्रोक्ति एवं औचित्य सिद्धान्त और साधारणीकरण		११			
इकाई ३ Unit 3	प्लेटो एवं अरस्तु के सिद्धान्त, वर्डसवर्थ और कालरिज के सिद्धान्त		१३			
इकाई ४ Unit 4	क्रोचे और टी. एस. इलियट, आइ. ए. रिचर्डस,		११			

तृतीय सेमेस्टर

द्वितीय पत्र

भाषा विज्ञान

संकेतांक हि ६०२ (HIN 602)

क्रेडिट आवर- ३

पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय भाषा विज्ञान	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय : ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	भाषा विज्ञान के सिद्धान्त : भाषा और सम्प्रेषण, सम्प्रेषण के विविध माध्यम, मानवेतर भाषा, भाषा और उच्चारण एवं अवयव		९			
इकाई २ Unit 2	भाषा की उत्पत्ति और प्रारम्भिक रूप, भाषा की प्रकृति, भाषा के विविध रूप, भाषा का विकास और उसके कारण, भाषा प्रयोग और संस्कृति, भाषा और अर्थ प्रतीति, भाषा के सार्वभौमिक तत्व		१३			
इकाई ३ Unit 3	भाषा विज्ञान का इतिहास, भाषा विज्ञान के विभाग या अंग, भाषा विज्ञान अध्ययन की उपयोगिता,भाषा विज्ञान और अन्य विषय और विज्ञान से उसका सम्वन्ध, शैलीविज्ञान, अनुवाद विज्ञान		१०			
इकाई ४ Unit 4	संसार की भाषाएं और उनका वर्गीकरण, भारतवर्ष की आर्येतर भाषाएं, भारतीय आर्यभाषा, भारोपीय भाषा परिवार		१५			

तृतीय सेमेस्टर

तृतीय पत्र

प्रयोजनमूलक हिंदी

संकेतांक हि ६०३ (HIN 603)

क्रेडिट आवर - ३

पाठ घंटा- ४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

क्रमांक इकाई	विषय प्रयोजनमूलक हिन्दी	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	प्रयोजनमूलक हिंदी: स्वरूप व्याख्या उपादेयता, चुनौतियाँ तथा शैलियां		८			
इकाई २ Unit 2	प्रयोजनमूल हिंदी के प्रयोगात्मक क्षेत्र, मुहावरे और लोकोक्तियां अर्थ, परिभाषा, विभिन्न मुहावरे तथा लोकोक्तियां: अर्थ, परिभाषा, शब्द शुद्धि, वाक्य शुद्धि और शब्द ज्ञान		१४			
इकाई ३ Unit 3	प्रयोजनमूलक हिंदी: पत्रलेखन, प्रारुपण, टिप्पणी, प्रतिवेदन, पत्राचार का अर्थ, प्रकार, आवेदन एवं सार-सक्षेपण		१२			
इकाई ४ Unit 4	कम्प्युटर में हिंदी प्रयोग, इन्टरनेट कार्यप्रणाली, हिंदी ब्लाग, फेसवुक- पेज, ई.- पुस्तकालय, पारिभाषिक शब्दावली : अर्थ एवं स्वरूप		१४			

तृतीय सेमेस्टर

चतुर्थ पत्र

अनुवाद : सिद्धान्त और प्रयोग

संकेतांक हि ६०४ (HIN 604)

क्रेडिट आवर -३

पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

क्रमांक इकाई	विषय अनुवाद : सिद्धान्त और प्रयोग	क्रेडिट आवर ३	पाठ घण्टा ४८	बाह्य परिक्षा समय ३ घण्टा	पूर्णाक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	अनुवाद कला, प्रकार, स्रोतभाषा, और लक्ष्य भाषा, अनुवाद की परंपरा		१४			
इकाई २ Unit 2	अनुवाद की प्रक्रिया, और प्रविधि विश्लेषण, अनुवाद के क्षेत्र, अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धान्त		१४			
इकाई ३ Unit 3	साहित्यिक अनुवाद : काव्यानुवाद एवं भावानुवाद, जनसंचार माध्यम और अनुवाद, अनुवाद की सार्थकता और प्रासंगिकता		१२			
इकाई ४ Unit 4	अनुवाद पुनरीक्षण- मूल्यांकन, मशीनी अनुवाद		८			

पंचम पत्र

पत्रकारिता

संकेतांक हि ६०५ (HIN 605)

क्रेडिट आवर - ३

पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

क्रमांक इकाई	विषय पत्रकारिता	क्रेडिक आवर ३	पाठ घण्टा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घण्टा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	पत्रकारिता का ऐतिहासिक पक्ष :उद्‌भव और विकास, हिंदी के प्रमुख पत्र तथा प्रमुख सम्पादक		१२			
इकाई २ Unit 2	पत्रकारिता का ऐतिहासिक पक्ष : पत्रकारिता की महत्ता एवं उपादेयता, समाचार का अर्थ एवं प्रकार, सम्पादन के आधारभूत, तत्व, जनसंचार का स्वरूप एवं अवधारणा		१४			
इकाई ३ Unit 3	पत्रकारिता का प्रयोगात्मक पक्ष : पत्रकारिता का व्यावहारिक ज्ञान, फीचर लेखन, सम्पादकीय लेखन, साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता, प्रूफ संशोधन, पत्र की साज सज्जा ।		१४			
इकाई ४ Unit 4	नेपाल में हिंदी पत्रकारिता का इतिहास, मुख्य पत्रपत्रिकाएं, हिंदी पत्रिका की संभावनाएं		८			

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

चतुर्थ सेमेस्टर

प्रथम पत्र

संस्कृत साहित्य

संकेतांक हि ६५१ (HIN 651)

क्रेडिट आवर -३

पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम परिचय

इकाई Unit	विषय संस्कृत साहित्य	क्रेडिट आवर ३	पाठघंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	संस्कृत साहित्य का इतिहास और उसका महत्व और वैदिक साहित्य		९			
इकाई २ Unit 2	लौकिक साहित्य, महाकाव्य और अन्य विधाओं का सामान्य परिचय		१२			
इकाई १ Unit 3	गीतिकाव्य, नाटक, चम्पुकाव्य और गद्य साहित्य का उद्भव और विकास		१२			
इकाई १ Unit 4	हितोपदेश, शुद्रक रचित मृच्छकटिकम्, मेघदूत		१५			

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

चतुर्थ सेमेस्टर

द्वितीय पत्र

नेपाल का हिन्दी साहित्य एवं प्रवासी हिन्दी साहित्य

संकेतांक हि ६५२ (HIN 652)

क्रेडिट आवर -३

पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

क्रमांक	विषय नेपाल का हिन्दी साहित्य एवं प्रवासी हिन्दी साहित्य	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit.1	नेपाल में हिन्दी का इतिहास। हिन्दी की अवस्था एवं आवश्यकता। प्रवासी हिन्दी साहित्य की अवस्था और आवश्यकता		१०			
इकाई २ Unit.2	नेपाल के प्रमुख हिन्दी साहित्यकार के चयनित तीन निवन्ध एवं चार संस्मरण का अध्ययन		१२			
इकाई ३ Unit.3	नेपाल के हिन्दी साहित्यकार/कवि की चयनित ग्यारह कविताएँ एवं "गुरूदक्षिणा" कहानी संग्रह की चयनित पाँच कहानियों का अध्ययन		१४			
इकाई ४ Unit.4	नेपाल के उपन्यासकार एवं प्रवासी साहित्यकार की रचनाओं का अध्ययन		१२			

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

चतुर्थ सेमेस्टर

तृतीय पत्र

समकालीन साहित्य

(ऐच्छिक पत्र)

संकेतांक हि ६५३-१ (HIN 653-1)

क्रेडिट आवर- ३
पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय समकालीन साहित्य (ऐच्छिक पत्र)	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	समकालीन साहित्य का इतिहास, अवधारणा, स्वरूप, परिभाषा, महत्व, प्रवृत्तियां, प्रमुख कवि एवं लेखक		१४			
इकाई २ Unit 2	समकालीन कविता के सोपान, प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएं, समकालीन,उपन्यास एवं कहानी, महिला कथाकार एवं उनकी रचनाएं।		१४			
इकाई ३ Unit 3	समकालीन दलित विमर्श : अवधारणा, एवं स्वरूप, दलित विमर्श : प्रमुख लेखक एवं उनकी रचना		१२			
इकाई४ Unit 4	समकालीन स्त्री विमर्श की अवधारणा एवं स्वरूप, स्त्री विमर्श : प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएं		८			

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

लोक साहित्य

(ऐच्छिक पत्र)

संकेतांक हि ६५३-२ (HIN 653-2)

क्रेडिट आवर - ३

पाठ घंटा - ४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय लोक साहित्य (ऐच्छिक पत्र)	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	लोक साहित्य की अवधारणा, लोक साहित्य का अर्थ, स्वरूप, परिभाषा, लोकभाषा		८			
इकाई २ Unit 2	लोक साहित्य का क्षेत्र, लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य, लोक साहित्य एवं परिनिष्ठित साहित्य : सम्वन्ध एवं भेद ।		१२			
इकाई ३ Unit 3	लोक साहित्य की प्रवृत्तियां, लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास, लोक साहित्य का महत्व । लोक नृत्य और लोक गीत ।		१४			
इकाई ४ Unit 4	लोक साहित्य की विविध विधाएं : लोक गीत, लोक कथा, लोकगाथा, लोक नाट्य ।		१४			

सृजनात्मक लेखन

(ऐच्छिक पत्र)

संकेतांक हि ६५३-३ (HIN 653-3)

क्रेडिट आवर - ३

पाठ घंटा - ४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय सृजनात्मक लेखन (ऐच्छिक पत्र)	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
इकाई १ Unit 1	सृजनात्मक लेखन : अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र, महत्व, सिद्धान्त, सृजनात्मक लेखन के विभिन्न प्रकार, लेखन की अन्तर्वस्तु ।		८			
इकाई २ Unit 2	सृजनात्मक लेखन के तत्व, सृजनात्मक चिंतन गुण, सृजनात्मक को प्रोत्साहित करने हेतु विशेष तकनीक । सृजनात्मक लेखन : भाव पक्ष एवं कला पक्ष		१४			
इकाई ३ Unit 3	सृजनात्मक लेखन के आयाम : कविता, गीत, लघुकथा, संक्षेपण, अनुच्छेद लेखन, कहानी लेखन, लघु नाटक सड़क नाटक		१२			
इकाई ४ Unit 4	स्क्रिप्ट लेखन (पटकथा लेखन) के आधारभूत तत्व, विज्ञापन लेखन, उद्घोषण लेखन, फीचर लेखन, सम्पादकीय लेखन, समाचार लेखन		१४			

चतुर्थ सेमेस्टर

चतुर्थ पत्र

शोध दर्शन और शोध प्रविधि

संकेतांक हि ६५४ (HIN 654)

क्रेडिट आवर- ३

पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई Unit	विषय शोध दर्शन और शोध प्रविधि	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
					आन्तरिक ४०	बाह्य ६०
इकाई १ Unit 1	अनुसंधान की परिभाषा, स्वरूप और आवश्यकता, अनुसंधान के मूल उपकरण, तथ्य एवं अन्वेषण, सिद्धान्त और नियम एवं समस्याओं का चुनाव, प्राक्कल्पना परिभाषा, आत्त सामग्री		१२			
इकाई २ Unit 2	योजना के लिए समय देना, समस्या के स्पृहनीय लक्षण, अनुसंधनात्मक अध्ययनों के मूल्यांकन के लिए विचार		१२			
इकाई ३ Unit 3	आत्त सामग्री की भाषा, समस्याओं की परिभाषा देने में व्यापकता एवं संकीर्णता के लाभ और समस्या का आरम्भिक अन्वेषण		१०			
इकाई ४ Unit 4	अनुसंधान कर्ता के गुण और शोध प्रवन्ध के विभिन्न गुण और शोध प्रवन्ध के अंगों का अध्ययन, भारतीय चिंतन परंपरा व शिक्षा दर्शन तथा दर्शन के पूर्वी एवं पश्चिमी सम्प्रदाय ।		१४			

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

प्रथम सेमेस्टर

प्रथम पत्र

हिन्दी भाषा

संकेतांक हि ५०१ (HIN 501)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यक्रम परिचय

इस पत्र में हिंदी भाषा के उद्‌भव, विकास एवं संरचना पर विशेष ध्यान दिया गया है । हिंदी की ऐनिहासिक पृष्ठभूमि, और उसका भौगोलिक विस्तार एवं हिंदी का व्याकरणिक स्वरूप तथा हिंदी भाषा प्रयोग के विविध रूप का सम्यक अध्ययन इस पत्र में कराया जाएगा । प्रस्तुत पत्र को चार इकाईयों में बाँटा गया है । इन चारों इकाइयों पर ही आधारित प्रश्न पूछे जाएंगे और सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे । अंक विभाजन दो खंडों में किया गया है ।

उद्देश्य

- हिंदी भाषा की व्युत्पत्ति और उसके विकास की मूलभूत जानकारी होगी ।
- प्राचीन आर्य भाषा, मध्यकालीन आर्य भाषाओं, आधुनिक आर्य भाषाओं तथा अपभ्रंश और पुरानी हिंदी के वारे में जानकारी होगी ।
- हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है । इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थी हिंदी ध्वनियां, शब्द संरचना, वाक्य विन्यास के साथ-साथ हिंदी व्याकरण को भलीभांति समझ सकेंगे ।
- हिंदी भाषा के विविध रूप यथा-मानक भाषा, राजभाषा, बोलचाल की भाषा एवं सम्पर्क भाषा से परिचित होंगे ।
- देवनागरी लिपि के विकास के सम्वन्ध में विद्यार्थी भलीभांति अवगत होंगे ।

विशेष उद्देश्य

- साहित्य, संस्कृति, चिंतन एवं अभिव्यक्ति में भाषा के प्रकार्य को समझ सकेंगे ।
- भाषा के आधारों को समझ कर उसे हिंदी भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में प्रयोग कर सकेंगे ।
- सामाजिक सांस्कृतिक अन्तःक्रिया के रूप में भाषा की विवेचना कर सकेंगे ।

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ५०१-१ हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : हिंदी शव्द की व्युत्पत्ति एवं विकास । हिंदी विशेष भाषा के अर्थ में । हिंदी नागरी अर्थ में । हिंदी के विविध रूप (हिंदी, उर्दु, हिन्दुस्तानी) । प्राचीन आर्य भाषाएं । मध्यकालीन आर्यभाषाएं (पालि, प्राकृत, शौरसेनी, अर्द्धमागधी, मागधी) । अपभ्रंश और पुरानी हिंदी का सम्वन्ध । आधुनिक आर्य भाषाएं ।

इकाई २ (Unit 2)

हि ५०१-२ हिंदी का भौगोलिक विस्तार : हिंदी की उपभाषाएं (पश्चिमी, पूर्वी, राजस्थानी, विहारी तथा पहाड़ी वर्ग) और उनकी वोलियाँ । क्षेत्रीय वोलियां : सामान्य परिचय, क्षेत्रीय वोलियों का विकास ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ५०१-३: हिंदी का व्याकरणिक स्वरूप : हिंदी ध्वनियाँ, हिंदी शव्द रचना (उपसर्ग, प्रत्यय, समास)। हिंदी की रूप रचना (लिंग, वचन और कारक व्यवस्था) । वाक्य भेद, वाक्य विश्लेषण और संश्लेषण । वर्तनी । विरामादि चिन्हों के प्रयोग ।

इकाई ४ (Unit 4)

हि ५०१-४: हिंदी भाषा प्रयोग के विविध रूप : बोलचाल की भाषा, मानक भाषा, राजभाषा, साहित्यिक भाषा, राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा, परिनिष्ठित भाषा । देवनागरी लिपि का उद्‌भव और विकास एवं विशेषताएं । देवनागरी लिपि की सार्थकता । मानक हिंदी : अर्थ एवं लक्षण । मानक हिंदी की विशेषताएं ।

पाठ्य पुस्तक

१. तिवारी, उदयनारायण (२०१६), हिंदी भाषा का उद्‌भव और विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद ।

२. जैन, महावीर शरण (१९८५), भाषा एवं भाषा विज्ञान, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद ।

३. द्विवेदी, महावीर प्रसाद (२०१४), हिंदी भाषा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

४. तिवारी, डा. भोलानाथ (२०२३), हिंदी भाषा, किताव महल, दिल्ली ।

सहायक पुस्तक

१. श्रीवास्तव, रविंद्रनाथ (१९९५), हिंदी भाषा संरचना के विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली

२. भाटिया, कैलाशचन्द्र (२०१८), हिंदी भाषा और स्वरुप, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।

३. वाजपेयी, किशोरी दास (२०१४), हिंदी शव्दानुशासन, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

४. वर्मा, धीरेन्द्र (१९३३), हिंदी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहावाद ।

प्रथम सेमेस्टर

द्वितीय पत्र

आदिकाल

संकेतांक हि ५०२ (HIN 502)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यांश परिचय

आदिकाल में काव्य के क्षेत्र में जिन प्रवृत्तियों ने जन्म लिया, उनका दीर्घकालीन असर हुआ। हिन्दी साहित्य का इतिहास क्या है और यह कब से शुरु हुआ, साथ ही इसके लेखन की परम्परा से छात्रों को अवगत कराना इसका उद्देश्य है। सिद्ध साहित्य, जैन साहित्य और नाथ साहित्य का हिन्दी साहित्य में विशेष स्थान है। इनकी प्रमुख रचनाओं एवं इसके साथ ही रासो साहित्य एवं विद्यापति की विस्तृत जानकारी दी जाएगी। अध्ययन अध्यापन की दृष्टि से इस पत्र को चार इकाईयों में बाँटा गया। इन चार इकाइयों पर ही आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे और सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। अंक विभाजन दो खण्डों में किया गया है।

उद्देश्य

- हिंदी साहित्य के आदिकाल को सविस्तार जान सकेंगे।
- आदिकालीन साहित्यिक पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे।
- हिंदी साहित्य के आरंभिक काल की विभिन्न रचनाओं को जान सकेंगे।
- आदिकाल के उपलब्ध साहित्यिक सामग्री का वर्गीकरण कर सकेंगे।
- पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता के आधार को समझ सकेंगे।
- आदिकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों, प्रतिनिधि कवियों तथा उनकी रचनाओं से अवगत होंगे।

विशेष उद्देश्य

- आदिकालीन ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिवेश के बारे में समझ सकेंगे।
- आदिकालीन साहित्य यथा-जैन, सिद्ध, नाथ, रासो और अपभ्रंश साहित्य के प्रभाव व परिणाम से अवगत होंगे।
- मौथिल-कोकिल विद्यापति का हिंदी-साहित्य में स्थान निर्धारित कर पाएंगे।
- काल विभाजन और नामकरण की समस्या के साथ आदिकाल की मुख्य प्रवृत्ति और कृत्तियों का अध्ययन कर सकेंगे।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ५०२-१ : हिन्दी साहित्य का इतिहास : साहित्य के इतिहास की परिभाषा, साहित्येतिहास की सामग्री, हिन्दी साहित्य का काल विभाजन नामकरण की समस्या तथा इससे सम्वद्ध विभिन्न विद्वानों के विचार ।

इकाई २ (Unit 2)

हि ५०२-२ : आदिकाल का परिचय, आदिकाल की परिस्थितियाँ (राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक) आदिकालीन साहित्य की प्रवृत्ति अथवा विशेषताएँ ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ५०२-३ : धार्मिक साहित्य : **सिद्ध साहित्य** –(परिचय, मुख्य कवि एवं सिद्ध साहित्य की विशेषताएँ) ।

सिद्ध साहित्य के प्रतिनिधि कवि **सरहपा** का साहित्यिक परिचय एवं चयनित निम्नलिखित पाँच दोहे(अर्थ, भावार्थ एवं व्याख्या) ।

(क) जहि मण पवण ण संचरई, रवि ससि णाहिं पवेस

(ख) देक्खउ सुण्उ पईसउ साद्उ

(ग) एथु से सरसई सोवणाह

(घ) अरे वढ सहस गइ पर रज्जह

(ङ) जाहि म्मण भई

जैन साहित्य–(परिचय, मुख्य कवि एवं जैन साहित्य की विशेषताएँ)

जैन साहित्य के प्रतिनिधि कवि **देवसेना** का साहित्यिक परिचय एवं चयनित निम्नलिखित पाँच दोहे(अर्थ, भावार्थ एवं व्याख्या)

(क) सत्त वि महुरई उवसमई, सयल विजिय वसि हुत

(ख) सत्थसयण वियाणियहूँ धम्मु ण चढई मणेवि

(ग) जं दिज्जह तं पाविअई, एउ ण वयण विसुद्ध

(घ) काई वहुत्तईं जंपअइं, जं अप्पणु पडिकुलु

(ङ) णिद्धण-मणुयह कट्डा, सज्जमि उण्णय दिंति

नाथ साहित्य –(परिचय, मुख्य कवि एवं नाथ साहित्य की विशेषताएँ)

नाथ साहित्य के प्रतिनिधि कवि गोरखनाथ का साहित्यिक परिचय एवं चयनित निम्नलिखित पाँच दोहे (अर्थ, भावार्थ एवं व्याख्या)

(क) गुर कीजै गहिला निगुरा न रहिला

(ख) ऐसा जाप जपौ मन लाई

(ग) अवधु ऐसा ग्यान विचारी

(घ) आवै संगै जाई अकेला

(ङ) कहा वुझै अवध राई

लौकिक साहित्य –रासो काव्य किसे कहते हैं, रासो काव्य की प्रमाणिकता, पृथ्वीराज रासो, परमाल रासो, वीसलदेव रासो, खुमाण रासो, विजयपाल रासो का संक्षिप्त परिचय ।

ढोला मारुदा दोहा एवं वसंत विलास का संक्षिप्त परिचय ।

विद्यापति का साहित्यिक परिचय एवं नेपाल सम्वन्ध तथा चयनित पांच भक्ति पद –

(क) जय जय भैरवि असुर भयावनि

(ख) कत सुखसार पाओल तुअ तीरे

(ग) कखन हरव दुख मोर हे

(घ) भल हर भल हरि

(ङ) माधव कत तोर करव

इकाई ४ (Unit 4)

हि ५०२-४ : आदिकालीन साहित्य की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक उपलब्धि । हिन्दी साहित्य में आदिकाल का योगदान एवं महत्त्व ।

पाठ्य पुस्तक

१. शुक्ल रामचन्द्र (१९९७), हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

२. वार्ष्णेय, डा. लक्ष्मीसागर (१९७८), हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहावाद ।

३. वेर्नीपुरी, रामवृक्ष (२०२२), विद्यापति की पदावली लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।

४. झा, डा.मंचला (२०२२), महाकवि विद्यापति और नेपाल, प्रकाशक महामना मालवीय मिशन, नेपाल ।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

सहायक पुस्तक

१. मिश्र, उमेश (१९६०), विद्यापति, अखिल भारतीय मैथिली परिषद, इलाहावाद ।

२. जैन, डा.विमल कुमार (१९७५), साहित्य रत्नाकर, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली ।

३. शर्मा, रामकिशोर (२०१९), हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास,लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज ।

४. राज, डा.सुमन (२०२२), हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली ।

५. डा. नागेन्द्र (१९१३), हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली ।

६. मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद (२०२३), हिन्दी साहित्य का अतीत, वाणी विलास, वाराणसी ।

७. वर्मा, रामकुमार (२०१०), हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास ।

८. शर्मा, रामकिशोर (२०१९), हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज ।

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

प्रथम सेमेस्टर

तृतीय पत्र

भक्तिकाल

संकेतांक हि ५०३ (HIN 503)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यक्रम परिचय

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल को स्वर्णयुग क्यों माना गया है और हिन्दी साहित्य में इस युग की क्या महत्ता है यह सविस्तार बताया जाएगा । यह वह युग था जिसमें मुख्यत: भागवत धर्म के प्रचार तथा प्रसार के परिणामस्वरूप भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था और उसकी लोकोन्मुखी प्रवृत्ति के कारण धीरे-धीरे लोक प्रचलित भाषाएँ भक्तिभावना की अभिव्यक्ति का माध्यम बनती गई और कालान्तर में भक्ति विषयक विपुल साहित्य की बाढ़ सी आ गई । हिन्दी साहित्य के इस पक्ष से छात्रों को अवगत कराना इस पत्र का मुख्य उद्देश्य है । इस पत्र को चार इकाईयों में बाँटा गया है । अंकों के विभाजन हेतु दो खण्डों में बाँटा गया है । प्रश्न चारो इकाईयों पर आधारित होंगे । सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे ।

उद्देश्य

- भक्तिकालीन राम काव्यधारा के वैशिष्ट्य और अवदान के बारे में जान पाएंगे ।
- भक्तिकालीन कृष्ण काव्यधारा के वैशिष्ट्य और अवदान के बारे में जान पाएंगे ।
- भक्तिकालीन गद्य साहित्य के बारे में समझ सकेंगे ।
- भक्तिकालीन सूफी काव्यधारा के बारे में जान पाएंगे ।
- भक्तिकालीन साहित्य के वर्गीकरण को समझ सकेंगे ।
- भक्तिकालीन प्रतिनिधि रचनाकारों को जान पाएंगे ।

विशेष उद्देश्य

- भक्तिकालीन साहित्य हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है । इस सन्दर्भ में विभिन्न विद्वानों के मतों को जान पाएंगे ।
- भक्तिकाल के ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों के साथ-साथ भक्ति आन्दोलन के बारे में सविस्तार जान पाएंगे ।
- तुलसी विश्व कवि माने जाते हैं । उनकी प्रतिभा और महत्ता के साथ मूल्यांकन कर पाएंगे ।
- ज्ञानमार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि कबीर के दार्शनिक विचारों को समझ पाएंगे ।

- जायसी का विरह वर्णन हिंदी साहित्य की अनूठी सम्पदा है । इस कथन की प्रामाणिकता को समझ सकेंगे ।
- वात्सल्य के क्षेत्र में जितना अधिक उद्घाटन सूर ने अपनी वन्द आंखों से किया, उतना किसी और कवि ने नहीं । इस कथन के वारे में सविस्तार समझ पाएंगे ।

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई : १ (Unit 1)

हि ५०३-१ : भक्तिकाल का उदय, परिचय, परिवेश (सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिस्थितियाँ), विशेषताओं का सविस्तार अध्ययन । भक्तिकाल का महत्व ।

इकाई :२ (Unit 2)

हि ५०३-२ : भक्तिकाल की प्रमुख धाराएँ :निर्गुण काव्यधारा (परिचय, परिस्थिति एवं प्रवृत्ति/विशेषताएँ)

निर्गुण काव्यधारा की शाखाएँ–ज्ञानाश्रयी शाखा (कवीर, नामदेव, नानक) प्रेमाश्रयी शाखा (जायसी, कुतुवन, मंझन सगुण काव्यधारा (परिचय, परिस्थिति एवं प्रवृत्ति/विशेषताएँ)

सगुण काव्यधारा की शाखाएँ – रामकाव्य (तुलसीदास एवं रामचरितमानस) दक्षिण भारत का रामकाव्य, वैश्विक परिदृश्य में रामकाव्य की महत्ता एवं प्रासंगिकता कृष्णकाव्य (सुरसागर एवं भ्रमरगीतसार), भ्रमर गीत की परम्परा अष्टछाप कवि–सूरदास, नन्ददास, परमानन्ददास, कृष्णदास, कुम्भनदास, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास, गोविन्द स्वामी (संक्षिप्त परिचय) विभिन्न सम्प्रदायों का संक्षिप्त परिचय (निम्वार्क सम्प्रदाय, सखी सम्प्रदाय, राधावल्लभ सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, गौड़ीय सम्प्रदायों का परिचय ।

इकाई : ३ (Unit 3)

हि ५०३-३: **रामचरितमानस का परिचय, महत्त्व, चरित्र चित्रण और विभिन्न दृष्टिकोण : उत्तरकांड की चयनित चौपाइयाँ**

इहाँ भानुकुल कमल दिवाकर....

जद्यपि सब वैकुंठ वखाना....

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि...

अति प्रिय मोही इहाँ के वासी...

जे ज्ञान मान विमत्त तव भव...

सुरसागर का परिचय, महत्त्व, चरित्र चित्रण और विभिन्न दृष्टिकोण – भ्रमरगीत सार के चयनित पद

पहिले करि परनाम नंद सो समाचार...

कहौं कहाँ ते आए हो..सुनि उधौ हम समुझत नाहिं

लरिकाई को प्रेम कहै अलि कैसे कर कै छूटत..

उधो यह मन और ना होय..पहिले ही चढि रह्यो..

कबीर चयनित दोहे–(कबीर ग्रंथावली से)

कबीर सतगुरु नां मिल्या रही अधूरी सीप...

तू तू करता तू भया मुझमें रही न तू ...

गुरु गोविन्द दोनों खड़े...

पोथि पढ़ि पढि जग मुआ...

जायसी ग्रंथावली (पद्मावत से)

कंवल जो विगसा मानसर...

निन्ह संतति उपराजा भांतिहि....

गगन हुता नहिं यहि दूति....

इकाई : ४ (Unit 4)

हि ५०३-४: **मीरा बाई –परिचय एवं दोहे**

मेरो तो गिरिधर गोपाल...

हरि आप हरो जन री भीर

मनमोहन कान्हा विनती करुं दीन रैन

सहजो बाई – परिचय एवं दोहे

प्रेम दिवाने जो भये, मन भयो चकना चूर

प्रेम लटक दुर्लभ महा, पावै गुरू के ध्यान

अड़सठ तीरथ गुरू चरण, परवी होत अंक

गुरूवचन हिय ले धरो, वज्यो कृपणन के दाम

दयाबाई –परिचय एवं दोहे

जो पग धरत सो दृढ धरत...

कायर कंपे देख करि, साधु को संग्राम...

आप मरन भय दूर करि...

रैदास – परिचय एवं दोहे

रैदास प्रेम नहीं छिप सकई...

ऊंचे कुल के कारणै, व्रह्म कोय ना होय....

माथे तिलक हाथ जपमाला....

महामति प्राणनाथ– परिचय एवं दोहे

पहले आप पहचानो रे....

विंध्य में सिंध समाया रे....

साधो भाई चीनहों

पाठ्य पुस्तक

१. शुक्ल, रामचन्द्र (१९८१), जायसी ग्रंथावली, नागरीप्रचारिणी.सभा काशी ।

२. दास, श्यामसुन्दर (२०२३), कवीर ग्रंथावली, अरिहन्त प्रकाशन, जोधपुर ।

३. तुलसीदास (१९७७), रामचरितमानस गीताप्रेस, गोरखपुर ।

४. शुक्ल, रामचन्द्र (१९६५), भ्रमरगीतसार, नागरीप्रचारिणी.सभा काशी ।

सहायक पुस्तक

१. शुक्ल, रामचन्द्र (१९७०), गोस्वामी तुलसीदास, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

२. मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद (१९४९), गोसाईं तुलसीदास, वाणी वितान, वाराणसी ।

३. सिंह, उदयभानु (१९६६), तुलसी काव्यमीमांसा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।

४. वाजपेयी, नन्ददुलारे (१९६३), महाकवि सूरदास, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ।

५. द्विवेदी, हजारी प्रसाद (१९४९), सूरसाहित्य, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, मुम्वई ।

६. शर्मा, हरवंशलाल (१९७१), सूर और उनका साहित्य, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़ ।

७. शुक्ल, रामनारायण (१९८६), भक्ति काव्य : स्वरुप और संवेदना, वाराणसी ।

८. साहा, डा. रणजीत (१९८८), महामति प्राणनाथ पद संचयन, श्री प्राणनाथ मिशन, दिल्ली ।

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

प्रथम सेमेस्टर

चतुर्थ पत्र

रीतिकाल

संकेतांक हि ५०४ (HIN 504)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यांश परिचय

रीतिकालीन काव्य को श्रृंगारिक रूप देते हुए रीतिकालीन कवियों ने उसे जन-जन तक पहुँचाया। रीतिकालीन काव्य ने हिन्दी काव्य जगत को और भी समृद्ध बनाया है। इस पत्र में रीतिकालीन कवियों के अन्तर्गत रीतिमुक्त, रीतिवद्ध और रीतिसिद्ध कवियों को शामिल किया गया है। जिससे छात्र इस काल की प्रवृत्तियों से अवगत हो सकेंगे। जिसके अन्तर्गत उस समय की सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों के साथ ही सम्यक अध्ययन कराया जायेगा। इस पत्र को चार इकाईयों में वांटा गया है। अंकों के विभाजन हेतु दो खंडों में वांटा गया है। प्रश्न चारों इकाईयों पर आधारित होंगे। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे।

उद्देश्य

- रीतिकाल और श्रृंगारिक काल के नामकरण को समझ पाएंगे।
- रीतिकालीन काव्य की विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- रीतिकाल के प्रवर्त्तक आचार्य के बारे में समझ पाएंगे।
- रीतिकालीन कवियों और उनकी रचनाओं पर विचार कर पाएंगे।
- रीतिकालीन काव्य की विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- रीतिकालीन गद्य साहित्य से परिचित हो पाएंगे।

विशेष उद्देश्य

- रीतिकालीन प्रतिनिधि रचनाकारों की साहित्यिक देन को समझ पाएंगे।
- रीतिकालीन काव्यधाराएं-रीतिवद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त कवियों और उनकी रचनाओं को समझ पाएंगे।
- रीतिकाल के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों को सविस्तार समझ पाएंगे।

विस्तृत पाठयक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ५०४-१ : रीतिकाल की पृष्ठभूमि एवं परिचय। रीति साहित्य का नामकरण। हिन्दी साहित्य में रीति परम्परा का वर्गीकरण। रीतिकाल की परिस्थितियाँ (राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक) रीतिकालीन गद्य एवं पद्य की प्रवृत्ति।

इकाई २ (Unit 2)

हि ५०४-२ : रीतिकालीन काव्य की प्रमुख धाराएँ – रीतिवद्ध कवि एवं काव्य का परिचय(चिंतामणि, देव, मतिराम, कुलपति मिश्र, केशवदास, भिखारीदास, तोष, रसलीन, पद्‌माकर भट्‌ट) रीतिसिद्ध कवि एवं काव्य का परिचय (बिहारी, सेनापति, वृन्दावन, पृथ्वीसिंह, रसनिधि, विक्रमादिदत्य, रामसहाय, वेनी वाजपेयी) विहारी के काव्य में सौंदर्य चेतना, श्रृंगारिक भाव व्यंजना। रीतिसिद्ध कवि एवं काव्य का परिचय(आलम, घनानन्द, वोधा, ठाकुर)

इकाई ३ (Unit 3)

हि ५०४-३ : रीतिकालीन प्रतिनिधि कवियों की चयनित रचनाएँ

(क) केशवदास रचित **रसिकप्रिया** और **कविप्रिया** के चयनित दोहे

रसिकप्रिया से

–प्रथम श्रृंगार सुहास्य रस करुणा रूद्र सुवीर...

–नवहू रस के भाव वहु तिनके भिन्न विचार...

–रति मति की अति चातुरी रति पति मंत्र विचार..

(ख) **कविप्रिया से (रामचन्द्रिका वन-गमन, तीसरा प्रभाव)**

–कविप्रिया केशव करी छमियों कवि अपराध

–अलंकार कवितान के सुनि-सुनि विविध विचार

–चरण धरत चिता निंद न भावत सोर

चिंतामणि रचित पद (स्रोत हिन्दी काव्यधारा)

–ओढे नील सारी घन घटा कारी चिंतामणि

विहारी (बिहारी सतसई के चयनित दोहे)

–कहत नटत रिझत खिझत मिलत...

–नहिं पराग नहि मधुर मधु

–वतरस लालच लाल की मुरली धरि लुकाय

कवि वृन्दावन(वृन्द) रचित वृन्द सतसई के चयनित दोहे

जो जाको गुण जानहि जो तेहि आदर देत...

सवई सहाय सवल के कौन निवल सहाय...

अपनी पहुँच विचारिकै करतव करिए जान...

घनानन्द रचित 'सुजान हित' के चयनित पद

हीन भएँ जल मीन अधीन कहा...

मीत सुजान अनीत करौ जिन...

भूषण रचित शिवराज भूषण के चयनित छंद

इन्द्र जिमि जंग पर...

यों म्लेच्छ वंस पर....

पाठ्य पुस्तक

१. नगेन्द्र (१९७८), हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पव्लिसिंग हाउस, दिल्ली ।

२. मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद (२०१७), विहारी, वाणी वितान, वाराणसी ।

३. मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद (१९९०), घनानन्द कवित्त, नन्दकिशोर एण्ड व्रदर, वाराणसी ।

४. रत्नाकर, जगन्नाथ (१९५५), उद्धव शतक,वाणी वितान, वाराणसी ।

सहायक पुस्तक

१. सिंह, वच्चन (२००८), विहारी का नया मुल्यांकन, लोकभारती नागरीप्रचारिणी सभा, इलाहावाद ।

२. सिंह, वच्चन (१९५६) रीतिकालीन कवियों की प्रेमव्यंजना, नागरीप्रचारिणी. सभा, काशी ।

३. गौड़, मनोहरलाल (१९७८), घनानन्द स्वच्छन्द काव्यधारा, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

४. द्विवेदी, सूर्यनारायण (२०१२), रीतिकालीन काव्य सिद्धान्त, अशोक वुक स्टाल, वाराणसी ।

५. सिंह, वच्चन (२०१७), हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।

६. मिश्र, विश्वनाथ (२०१५), हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पव्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली ।

प्रथम सेमेस्टर

पंचम पत्र

आधुनिक काल

संकेतांक हि ५०५ (HIN 505)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यक्रम परिचय

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल को एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है । यह वह युग था जब खड़ी बोली हिन्दी अपना परिष्कृत रूप ले रही थी । इन परिस्थितियों का अनुशीलन ही इस पत्र का मुख्य उद्देश्य है । इस पत्र को भी अन्य पत्रों की तरह चार इकाईयों में बाँटा गया है । अंकों का विभाजन दो खण्डों में किया गया है । प्रश्न चारों इकाईयों पर आधारित होंगे और सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे ।

उद्देश्य

- आधुनिक युग की प्रमुख काव्य प्रवृत्तियो एवं प्रमुख कवियों का परिचय प्राप्त करेंगे ।
- हिंदी साहित्य के आधुनिक काल से परिचित होंगे ।
- आधुनिक युग की रचना के आस्वादन एवं समीक्षण की क्षमता विकसित हो सकेगे ।
- हिंदी साहित्य के काल विभाजन से परिचित हो सकेंगे ।
- आधुनिक काल की पृष्ठभूमि से परिचित हो सकेंगे ।
- आधुनिक काल की विभिन्न परिस्थितियों से परिचित होकर उसकी विशेषताओं को समझ सकेंगे ।
- इस काल खंड में साहित्यिक रचना को प्रेरित करनेवाले महत्वपूर्ण विभिन्न कारकों को भलीभांति जान सकेंगे ।

विशेष उद्देश्य

- आधुनिक काल में चित्रित सामाजिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक तथा आधुनिक परिवेश में बदलते जीवन मूल्यों से बोध हो पाएंगे ।
- आधुनिक काल के नामकरण के साथ-साथ इस नाम का औचित्य एवं उसकी सार्थकता से अभिज्ञ हो सकेंगे ।
- भाषा परिष्कार की दृष्टि से यह काल सब से विशिष्ट और उल्लेखनीय कहा जा सकता है । हिंदी भाषा के परिष्कार के लिए किए गए प्रयास से परिचित हो पाएंगे ।

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ५०५-१ : आधुनिक काल का उद्भव, विकास, नामकरण, परिस्थितियाँ (सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक) भारतेन्दु युग, द्विदी युग, शुक्ल युग और उस युग की काव्यधारा, लेखक और कवि, आधुनिक काल । आधुनिककालीन साहित्य को प्रभावित करने वाली प्रमुख विचारधाराएँ–अद्वैतवाद, अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, गांधीवाद, समाजवाद आधुनिककालीन साहित्य की प्रवृत्ति अथवा विशेषताएँ

इकाई २ (Unit 2)

हि ५०५-२ : भारतेन्दुयुगीन एवं द्विवेदीयुगीन साहित्य, भारतेन्दु युग का परिचय, परिस्थितियाँ, विशेषता अथवा प्रवृत्ति, गद्य एवं पद्य का विकास क्रम, साहित्य की विभिन्न विधाओं का उद्भव, भारतेन्दुयुगीन साहित्यकारों(गद्य,पद्य)एवं उनकी कृतियों का खड़ी वोली हिन्दी की प्रतिष्ठा(परिचय)

द्विवेदी युग का परिचय, परिस्थितियाँ, विशेषता अथवा प्रवृत्ति, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, द्विवेदीकालीन साहित्य(गद्य,पद्य) का विकासक्रम, द्विवेदीयुगीन साहित्यकारों (गद्य,पद्य) एवं उनकी कृतियों का परिचय एवं विशेषताएँ ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ५०५-३ : शुक्लयुग एवं प्रेमचंद युग (गद्य एवं पद्य) शुक्ल युग का परिचय, परिस्थितियाँ, विशेषता अथवा प्रवृत्ति, गद्य एवं पद्य का विकास क्रम, साहित्य की विभिन्न विधाओं का उद्भव, शुक्लयुगीन साहित्यकारों(गद्य,पद्य)एवं उनकी कृतियों का खड़ी वोली हिन्दी की प्रतिष्ठा(परिचय) प्रेमचंद युग का परिचय, परिस्थितियाँ, विशेषता अथवा प्रवृत्ति, एवं विकास क्रम , उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद का स्थान एवं वर्तमान में प्रासंगिकता, प्रेमचंदयुगीन साहित्यकारों(गद्य एवं पद्य) एवं कृतियों का परिचय ।

इकाई ४ (Unit 4)

हि ५०५-४ : छायावाद की परिस्थिति, प्रवृत्ति/विशेषताएँ । छायावादी कवि एवं कृति, रहस्यवाद की परिस्थिति, प्रवृत्ति/विशेषताएँ । रहस्यवाद कवि एवं कृति छायावाद और रहस्यवाद का अन्तर्सम्बन्ध प्रयोगवाद की परिस्थिति, प्रवृत्ति/विशेषताएँ । प्रयोगवादी कवि एवं कृति छायावाद और प्रयोगवाद का अन्तर्सम्वन्ध एवं अन्तर । प्रगतिवाद की परिस्थिति, प्रवृत्ति/विशेषताएँ । तारसप्तक कवियों का परिचय । प्रयोगवाद एवं प्रगतिवाद का मार्क्सवाद से सम्वन्ध एवं प्रभाव समकालीन कविता का परिचय एवं प्रवृत्ति ।

पाठ्य पुस्तक

१. वार्ष्णेय, लक्ष्मी सागर (१९७८), हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती , इलाहाबाद ।

२. कपूर, श्यामचन्द्र (१९८०) हिन्दी साहित्य का इतिहास, ग्रंथ अकादमी नई दिल्ली ।

३. शुक्ल, रामचन्द्र (१९९७), हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

४. दीप्ति, डा.श्वेता (२०१८), आधुनिक हिन्दी कविता : एक अनुशीलन, राइटर च्वाइस प्रकाशन, नई दिल्ली ।

सहायक पुस्तक

१. दीक्षित, सूर्यप्रसाद (१९९३), छायावादी काव्य का सौन्दर्यशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली ।

२. सिंह, नामवर (१९९५), कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

३. सोर्नी, डॉ..राजाराम (१९७५), छायावादी काव्यधारा के दार्शनिक स्रोत, आशु प्रकाशन, इलाहाबाद ।

४. मिश्र, डा.वहादुर (२००४), कविता आजतक, मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

५. श्रीवास्तव, परमानन्द (संपादक) (१९९८), समकालीन हिन्दी आलोचना, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

द्वितीय सेमेस्टर

प्रथम पत्र

हिन्दी साहित्य की विधाएँ

संकेतांक हि ५५१ (HIN 551)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यांश परिचय

हिन्दी साहित्य विधाओं की दृष्टि से एक समृद्ध इतिहास रहा है । यह वह युग था जब खड़ी बोली हिन्दी विभिन्न विधाओं में अपना परिष्कृत रूप ले रही थी । इन परिस्थितियों का अनुशीलन ही इस पत्र का मुख्य उद्देश्य है । जिसमें सभी विधाओं के विषय में सैद्धान्तिक जानकारी दी जाएगी । इस पत्रों को भी अन्य पत्रों की तरह चार इकाईयों में बांटा गया है । अंकों का विभाजन दो खंडों में किया गया है । प्रश्न चारों इकाईयों पर आधारित होंगे और सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे ।

उद्देश्य

- साहित्यिक रचनाओं का वर्गीकरण कर सकेंगे ।
- गद्य लेखन में सृजनात्मकता व मौलिकता का विकास कर सकेंगे ।
- ज्ञान-विज्ञान को प्रगति के फलस्वरुप साहित्य में विकसित नवीन विद्याओं का परिचय दे सकेंगे ।
- प्रमुख लेखकों और उनकी कृतियों की जानकारी दे सकेंगे ।
- गद्य की विभिन्न विद्याओं का स्वरूप स्पष्ट कर सकेंगे ।

विशेष उद्देश्य

- विभिन्न साहित्यिक विद्याओं के माध्यम से अपने भाव, विचार, अनुभव प्रतिक्रिया व्यक्त कर पाएंगे ।
- साहित्य की विभिन्न विद्याओं की जानकारी दी जाएगी, जिससे उन विद्याओं से परिचित हो पाएंगे और छात्रों में इन विद्याओं के प्रति अभिरुचि जगेगी और छात्र इन विद्याओं में लेखन के लिए प्रेरित होंगे ।
- गद्य की विभिन्न विधाओं में अन्तर कर सकेंगे तथा एक-दूसरे से मिलती-जुलती गद्य विधाओं में मिलनेवाली समानता को जान सकेंगे ।

इकाई १ (Unit 1)

हि ५५१-१ : नाटक की परिभाषा, नाटक के प्रकार एवं नाटक का विकासक्रम तथा विशेषताएँ। एकांकी की परिभाषा, एकांकी के प्रकार एवं एकांकी का विकासक्रम तथा विशेषताएँ। उपन्यास की परिभाषा, उपन्यास के प्रकार एवं उपन्यास का विकासक्रम तथा विशेषताएँ।

इकाई २ (Unit 2)

हि ५५१-२ : निवंध की परिभाषा, निवंध के प्रकार एवं निवंध का विकासक्रम तथा विशेषताएँ।

कहानी कला की परिभाषा, प्रकार, विशेषताएँ एवं विकासक्रम।

आत्मकथा की परिभाषा, प्रकार, शैली, विशेषताएँ एवं विकासक्रम।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ५५१-३ : जीवनी की परिभाषा, प्रकार एवं विशेषताएँ।

यात्रावृतांत की परिभाषा, प्रकार एवं विशेषताएँ।

रेखाचित्र की परिभाषा, प्रकार एवं विशेषताएँ।

इकाई ४ (Unit 4)

हि ५५१-४: संस्मण की परिभाषा, प्रकार एवं विशेषताएँ।

कविता की परिभाषा, काव्य के अंग, भेद (श्रव्य काव्य, दृश्य काव्य,प्रवंध काव्य, मुक्तक काव्य)।

पाठ्य पुस्तक :

१. कुरुप, के.वी नारायण (१९०७), साठोत्तरी हिन्दी नाटक, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
२. ओझा, डा.दशरथ (२०१२), हिन्दी नाटक उद्‌भव और विकास, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली।
३. शुक्ल, रामचन्द्र (१९९७), हिन्दी साहित्य का इतिहास, नगरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।
४. वार्ष्णेय, डा. लक्ष्मीसागर (१९७८), हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहावाद।

सहायक पुस्तक

१. त्रिपाठी, वशिष्ठ नारायण (१९९१), नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान, जगतराम एण्ड संन्स, दिल्ली।
२. रस्तोगी, गिरीश (१९१७), हिन्दी नाटक का आत्मसंघर्ष, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
३. महेन्द्र,रामचरण (१९५८),हिन्दी एकांकी उद्‌भव और विकास, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
४. दास, सुन्दर (२०११), साहित्यालोचन, इंडियन प्रेस, पव्लिकेशन लिमिटेड, प्रयाग।
५. रवानी, डॉ.विजय (२०२२), हिन्दी नाटक के विविध आयाम, आनन्द प्रकाशन, कोलकाता।

द्वितीय सेमेस्टर

द्वितीय पत्र

आधुनिककालीन गद्य एवं पद्य साहित्य

संकेतांक हि ५५२ (HIN 552)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यक्रम परिचय

हिन्दी साहित्य के आधुनिककाल का इतिहास आज तक जारी है । भारतेन्दु युग से लेकर वर्तमान समय तक विभिन्न साहित्यकारों एवं कवियों ने इस परम्परा को अपनी कृतियों से समृद्ध किया है । इस पत्र में छात्र विभिन्न साहित्यकारों से परिचित होंगे । इस पत्र को भी अन्य पत्रों की तरह चार इकाईयों में बाँटा गया है । अंकों का विभाजन दो खण्डों में किया गया है । प्रश्न चारों इकाईयों पर आधारित होंगे और सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे ।

उद्देश्य

- आधुनिककालीन गद्य एवं पद्य के विकास की सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- आधुनिककालीन गद्य एवं पद्य के विभिन्न चरण एवं उनके नाम से परिचित हो सकेंगे ।
- आधुनिककालीन गद्य एवं पद्य की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे ।
- आधुनिककालीन गद्य लेखकों एवं पद्य की विभिन्न प्रवृत्तियों का समझ होगी ।
- आधुनिककालीन गद्य लेखकों एवं कवियों की रचनाओं से अवगत होंगे ।
- आधुनिककालीन गद्य एवं पद्य की विशिष्टता एवं सीमाओं से परिचित हो सकेंगे ।

विशेष उद्देश्य

- आधुनिककालीन गद्य एवं पद्य का विकास जिस तरह हुआ है, उनके अन्तर्गत विभिन्न विशेषताओं के आधार पर कालखंडों का नामकरण किया गया है । छात्रों को उन विभिन्न कालखंडों के नामकरण और उनके औचित्य की जानकारी मिल सकेगी ।
- आधुनिककालीन गद्य एवं पद्य के वाह्य एवं अंतरंग रूपों में युनारूप जो नए-नए प्रयोग नित्य-प्रति होते रहते हैं, वे हिन्दी गद्य एवं पद्य की जीवन-शक्ति एवं स्फूर्ति के परिचायक है, छात्र यह समझ सकेंगें ।

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ५५२-१ : भारतेन्दु कृत 'वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति' (प्रहसन) । किशोरीलाल कृत 'इन्दुमति' (कहानी) । चन्द्रधर शर्मा गुलेरी कृत 'उसने कहा था' (कहानी) । विश्वम्भरनाथ शर्मा कृत 'ताई' (कहानी) । पाठ्यांश से व्याख्या एवं प्रश्नोत्तर ।

इकाई २ (Unit 2)

हि ५५२-२ : भगवतीचरण वर्मा कृत 'प्रायश्चित', 'इंस्टालमेंट'(कहानी) । प्रेमचंद कृत 'गोदान'(उपन्यास) । उपेन्द्रनाथ अश्क कृत 'रक्षक'(एकांकी) । पाठ्यांश से व्याख्या एवं प्रश्नोत्तर ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ५५२-३ : छायावाद एवं रहस्यवाद-जयशंकर प्रसाद कृत 'कामायनी'(प्रथम तीन सर्ग : चिंता, श्रद्धा, इड़ा) । सूर्यकांत त्रिपाठी निराला कृत 'राम की शक्तिपूजा' । सुमित्रानन्दन पंत कृत 'मौन निमंत्रण' एवं 'धरती कितना देती है' । महादेवी वर्मा कृत 'जो तुम आ जाते एक बार', 'नीर भरी दुख की वदली' ।

इकाई ४ (Unit 4)

हिं ५५२-४ : प्रयोगवाद एवं प्रगतिवाद -सच्चिदानन्द वात्सयायन 'अज्ञेय' रचित 'नदी का द्वीप', 'सामाज्ञी का नेवैद्यदान' । तारसप्तक से : 'मुक्तिवोध की अंधेरे में' । नेमिचन्द्र जैन की 'आज फिर जव तुमसे सामना हुआ' । भारतभूषण की 'राम की जल समाधि' । प्रभाकर माचवे की 'अश्वत्थ' । नागार्जुन की 'वादल को घिरते देखा है' । धुमिल की 'लोहे का स्वाद' । कात्यायनी की 'कुण्डलाकार' । अनामिका की 'वरसात का मतलव है' ।

पाठ्य पुस्तक

१. पाण्डेय, डॉ. मिथिलेश (२०१६) भारतेन्दु ग्रंथावलि, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली ।

२. चातक, डॉ. गोविन्द (१९९८), भारतेन्दु के समग्र नाटक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली ।

३. श्रीवास्तव, गरिमा (२०१७), किशोरीलाल गोस्वामी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ।

४. फुल्ल, डॉ. सुशीलकुमार (२०१४), चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की उत्कृष्ट कहानियाँ, युनिकार्न वुक्स, दिल्ली ।

सहायक पुस्तक

१. उपाध्याय, करुणाशंकर (२०२२), जयशंकर प्रसाद महानता के आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।

२. पाटील, पद्मा (२००१), मुक्तिवोध की कविता, दक्षिण भारत हिन्दी परिषद, कोल्हापुर ।

३. दिवाकर, डा.महेश कौल, डा.मीना कुमार, डा.अभय (२०१२), हिन्दी गीतिकाव्य विकास के सोपान, विश्व हिन्दी प्रकाशन, नई दिल्ली

४. दीक्षित, सूर्यप्रसाद (१९९३),छायावादी काव्य का सौन्दर्यशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्लीं ।

५. सिंह, नामवर (१९९५), कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

६. मिश्र, डॉ.वहादुर (२००४), कविता आज तक, मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

७. मधुरेश (२०१४), हिंदी उपन्यास का विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

८. प्रेमचंद (२०१५), गोदान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

९. प्रसाद, जयशंकर (२०११), कामायनी, गीतांजलि प्रकाशन, दिल्ली ।

१०. अनामिका (२००४), अव भी वसंत को तुम्हारी जरुरत है, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

द्वितीय सेमेस्टर

तृतीय पत्र

आलोचना साहित्य

संकेतांक हि ५५३ (HIN 553)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यक्रम परिचय

यह पत्र हिन्दी साहित्य के आलोचना के उद्भव और विकास से परिचित कराएगा । साथ ही प्रसिद्ध आलोचकों की रचनाओं का अध्ययन कराने में सक्षम होगा । इस पत्र के भी चार इकाई हैं । अंकों का विभाजन दो खण्डों में किया गया है । प्रश्न सभी इकाईयों पर आधारित होंगे और अनिवार्य होंगे ।

उद्देश्य

- आलोचना के स्वरूप से परिचित कराना ।
- हिंदी आलोचना के विकास का परिचय देना ।
- हिंदी के प्रमुख आलोचकों की आलोचना पद्धतियों से अवगत कराना ।
- हिंदी आलोचकों के प्रदेय से परिचित कराना ।
- छात्रों में आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करना ।

विशेष उद्देश्य

- समकालीन आलोचना एवं आतोचकों के वारे में सम्यक अध्ययन कर सकेंगे ।
- हिंदी साहित्य की आलोचना विद्या की विवेचना कर सकेंगे
- छात्र को किसी साहित्यिक कृति की आलोचनात्मक विवेचना के लिए सक्षम कर सकेंगे ।
- प्रमुख आलोचक और आलोचनात्मक कृतियों की समझ विकसित होगी ।

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ५५३-१ : हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास । हिन्दी आलोचना की प्रवृत्ति । स्वरूप तथा हिन्दी आलोचना के विविध प्रकार । आलोचक एवं समालोचक के गुण ।

इकाई २ (Unit 2)

हि ५५३-२ : द्विवेदी युगीन प्रमुख आलोचक – लाला भगवान दीन, महावीर प्रसाद द्विवेदी, कृष्णविहारी मिश्र, मिश्र वंधु, शुकदेव विहारी । शुक्लयुगीन प्रमुख आलोचक – रामचन्द्र शुक्ल, वावु गुलावराय, विश्वनाथ मिश्र, पन्नालाल वख्शी, फादर कामिल वुल्के, नन्ददुलारे वाजपेयी ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ५५३-३ : समकालीन हिन्दी आलोचना की प्रकृति एवं प्रमुख आलोचक : रामचन्द्र तिवारी, मैनेजर पाण्डेय, डॉ. धर्मवीर भारती, उदयभानु सिंह, शम्भुनाथ, काशीनाथ सिंह ।

इकाई ४ (Unit 4)

हि ५५४-४ : प्रमुख आलोचक एवं उनकी रचना : आचार्य शुक्ल का काव्यालोचन : नन्ददुलारे वाजपेयी । आचार्य द्विवेदी की आलोचना पद्धति और उपलब्धि : डॉ. शम्भुनाथ सिंह । आलोचना का अंत:स्वरूप : डॉ. नगेन्द्र । आलोचना भी रचना है : काशीनाथ सिंह । साहित्य और इतिहास दृष्टि : मैनेजर पाण्डेय ।

पाठ्य पुस्तक

१. शर्मा, रामविलास (१९८१), रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

२. यादव, चौथीराम (२०१६), आचार्य हजारी प्रसाद द्विदी का साहित्य, हरियाणा ग्रंथ, अकादमी ।

३. श्रीवास्तव, परमानन्द (१९९८), समकालीन हिन्दी आलोचना, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली ।

सहायक पुस्तक

१. वार्ष्णेय, लक्ष्मी सागर (१९७८), हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती , इलाहावाद ।

२. कपूर, श्यामचन्द्र (१९८०), हिन्दी साहित्य का इतिहास, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली ।

३. शुक्ल, रामचन्द्र (१९९७), हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

४. सिंह, नामवर (२०२३), आलोचना और विकासधारा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

५. त्रिपाठी, विश्वनाथ (१९९०), हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

६. खण्डेलवाल, रामेश्वरलाल (२०२०), हिन्दी आलोचना के आधार स्तम्भ, लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली ।

७. मधुरेश (२०२२), हिंदी आलोचना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली ।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

द्वितीय सेमेस्टर

चतुर्थ पत्र

निबंध, नाटक एवं अन्य साहित्य

संकेतांक हि ५५४ (HIN 554)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यक्रम परिचय

इस पत्र में साहित्य के विविध अंग निबंध एवं नाटक को अध्ययन हेतु शामिल किया गया है इन विधाओ में हिन्दी साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। कुछ प्रमुख निबंधकार और नाटककार की रचनाओं एवं कृतियों का अध्ययन कराना इस पत्र का लक्ष्य है। इस पत्र के भी चार इकाई किए गए हैं। प्रश्न सभी इकाई से पूछे जाएँगे। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। अंक विभाजन दो खण्डों में किया गया है।

उद्देश्य

- हिंदी निवंध एवं नाटक के अर्थ एवं स्वरूप को समझ सकेंगे।
- हिंदी की निवंध एवं नाटक परंपरा को जान सकेंगे।
- हिंदी निवंध एवं नाटक की विकासयात्रा को जान सकेंगे।
- हिंदी निवंध एवं नाटक की सामान्य विशेषताओं तथा वर्गीकरण का आधार समझ पाएंगे।
- हिंदी निवंघ एवं नाटक कला के वारे में जान पाएंगे।
- हिंदी निवंध एवं नाटक के तत्वों के वारे में जान पाएंगे।
- हिंदी नाटक के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे।

विशेष उद्देश्य

- तत्कालीन समाज के देशकाल वातावरण का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- निवंध एवं नाटक में छिपे लोक कल्याण के अर्थ को जान सकेंगे।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निवंधों की विशेषताओं के साथ निवंध के सन्दर्भ में शुक्ल का दृष्टिकोण समझ सकेंगे।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रख्यात निवंधकार, इतिहास लेखक, अन्वेषक, आलोचक, सम्पादक तथा उपन्यासकार थे, यह जान पाएंगे।
- भीष्म साहनी, मृणाल पाण्डेय तथा अन्य नाटककारों के नाटकों का अध्ययन कर पाएंगे।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ५५४-१ निवंध

रामचन्द्र शुक्ल लिखित निवंध –'उत्साह' । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखित 'क्या निराश हुआ जाए' । प्रेमचंद लिखित 'साहित्य क्या है' । निवंध की विशेषता, प्रकार, भाव एवं उद्देश्य ।

इकाई २ (Unit 2)

हि ५५४-२ नाटक

मृणाल पाण्डेय का नाटक 'आदमी जो मछुवारा नहीं था' का सम्पूर्ण अध्ययन । संवाद कला, भाषा नाटक का उद्देश्य । भीष्म साहनी का 'हानुस' नाटक का सम्पूर्ण अध्ययन । नाटक की भाषा, संवाद तथा उद्देश्य ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ५५४-३ रेखाचित्र

रेखाचित्र : रामवृक्ष वेनीपुरी(गेहूँ और गुलाव)एवं महादेवी वर्मा(स्मृतिचित्र : रामा) का अध्ययन । भाषा शैली, भाव व्यंजना, चरित्र चित्रण, चित्रात्मकता, कलात्मकता,व्याख्या आदि ।

इकाई ४ (Unit 4)

हि ५५४-४ संस्मरण एवं यात्रा वृत्तांत

संस्मरण : नरेन्द्र कोहली(स्मृतियों के गलियारे से : मुखौटा और मन) । ममता कालिया(कल परसों के वरसों : पहाड़ जिन पर टूटता ही रहा एवं शहर को गाँव की चुनौती)

यात्रा वृतांत : रमेश पोखरियाल निशंक (एक दिन नेपाल में : नेपाल में विभिन्न जाति समुदाय एवं आस्था के आधार स्तम्भ) ।

पाठ्य पुस्तक

१. शुक्ल, रामचन्द्र (१९३०), चिंतामणि, भाग १, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग ।
२. द्विदी, हजारी प्रसाद (२००७), अशोक के फूल, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली ।
३. पाण्डेय, मृणाल (२००१), नाटक : आदमी जो मछुवारा नहीं था, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली ।
४. वर्मा, महादेवी (२००८), स्मृति की रेखाएँ, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली ।

सहायक पुस्तक

१. सिंह, डा विभा (२०२२), आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निवंधों का वैचारिक चिन्तन, संजय प्रकाशन, दिल्ली ।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

२. शर्मा, डा कृष्णदेव (२०१२),अशोक के फूल समीक्षा, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली ।
३. वार्ष्णेय, लक्ष्मी सागर (१९७८), हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती , इलाहावाद ।
४. कपूर, श्यामचन्द्र (१९८०), हिन्दी साहित्य का इतिहास, ग्रंथ अकादमी नई दिल्ली ।
५. शुक्ल, रामचन्द्र (१९९७), हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरीप्रचारिणी.सभा, वाराणसी ।
६. कोहली, नरेन्द्र (२०१२), स्मृतियों के गलियारे से, भावना प्रकाशन, नई दिल्ली ।
७. कालिया, ममता (२०११), कल परसों के वरसों, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
८. पोखरियाल, रमेश (२०१८), एक दिन नेपाल में, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ।

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

द्वितीय सेमेस्टर

पंचम पत्र

तुलनात्मक साहित्य

संकेतांक हि ५५५ (HIN 555)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यक्रम परिचय

तुलनात्मक साहित्य वह विद्या-शाखा है जिसमें दो या अधिक भिन्न भाषायी, राष्ट्रीय या सांस्कृतिक समूहों के साहित्य का अध्ययन किया जाता है । तुलना इस अध्ययन का मुख्य अंग है । साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन व्यापक दृष्टि प्रदान करता है । संकीर्णता के विरोध में व्यापकता आज के विश्व-मनुष्य की आवश्यकता है । तुलनात्मक साहित्य, एकक साहित्य अध्ययन से भिन्न है । वर्तमान समय में इसकी विशेष आवश्यकता है । इस पत्र के भी चार इकाई किए गए हैं । प्रश्न सभी इकाई से पूछे जाएँगे । सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे । अंक विभाजन दो खण्डों में किया गया है ।

उद्देश्य

- तुलनात्मक शब्द के मूल अर्थ से परिचित हो सकेंगे ।
- तुलनात्मक साहित्य की अवधारणा से परिचित हो सकेंगे
- तुलनात्मक साहित्य पर विभिन्न विद्वानों के मतों को जान सकेंगे ।
- तुलनात्मक साहित्य के इतिहास का परिचय प्राप्त कर सकेंगे ।
- तुलनात्मक साहित्य की विशेषता से परिचित हो सकेंगे ।
- तुलनात्मक साहित्य और संस्कृति के अन्तर्सम्वन्ध को समझ सकेंगे ।

विशेष उद्देश्य

- तुलनात्मक साहित्य के परिचय एवं प्रस्थान सहित उसके मूलाधार की जानकारी सहित हासिल कर सकेंगे ।
- प्राच्य-पाश्चात्य विशेषज्ञों की मान्यता सहित तुलनात्मक साहित्य के महत्त्व को जान पाएंगे ।
- राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्वन्धों की समझ वनाने में तुलनात्मक साहित्य के अवदान की जानकारी ले पाएंगे ।

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ५५५-१: तुलनात्मक साहित्य की अवधारणा, परिभाषा, स्वरूप वर्तमान समय में इसकी आवश्यकता और औचित्य ।

इकाई २ (Unit 2)

हि ५५५-२: तुलनात्मक साहित्य का इतिहास, विशेषता और महत्त्व । एकक साहित्य से तुलनात्मक साहित्य किस तरह भिन्न है ? साहित्य एंव साहित्यकार में तुलना के विभिन्न समानता एवं असमानता के विन्दुओं का अध्ययन ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ५५४-३: तुलनात्मक साहित्य : अध्ययन पद्धतियाँ (तुलनात्मक अध्ययन की प्रक्रिया,सामग्री विश्लेषण प्रक्रिया, प्रभाव प्रविधि) ।

इकाई ४ (Unit 4)

हि ५५४-४: हिन्दी एंव नेपाली साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन: विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला की कहानी 'दोषी चश्मा' एवं 'कर्नेल का घोड़ा' तथा इलाचंद जोशी की 'संन्यासी' एवं 'जहाज का पंक्षी' का तुलनात्मक अध्ययन ।

पाठ्य पुस्तक

१. चौधरी, इन्द्रनाथ (२०२३), तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
२. अय्यर, एन. ई.(२००४), तुलनात्मक साहित्य, विद्या विहार, दिल्ली ।
३. चौधरी, इन्द्रनाथ (१९८३), तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
४. राजुरकर, वी.एच. और राजमल वोरा (संपादक), (२०१५), तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय भाषाएँ और साहित्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

सहायक पुस्तक

१. कोइराला, विश्वेश्वरप्रसाद (२०१५), दोषी चश्मा, लिपि बुक्स, काठमाडू ।
२. जोशी, इलाचन्द्र (२०१५), सन्यासी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहावाद ।
३. जोशी, इलाचन्द्र (२००८), जहाज का पंक्षी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहावाद ।
४. निर्मम, डा. हेमराज (१९९२), कथाकार इलाचन्द्र जोशी, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ ।
५. त्रिपाठी, डा. रामछवीलाा (२०१८), हिन्दी और भारतीय भाषा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
६. वोरा, डा. राजमल एवं राजुरकर, भ.ह. (सं.), (२०१५), तुलनात्मक अध्ययन भारतीय भाषाएं और साहित्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

तृतीय सेमेस्टर

प्रथम पत्र

पूर्वीय और पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त

संकेतांक हि ६०१ (HIN 601)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यक्रम परिचय

यह पत्र पूर्वीय और पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त का अध्ययन कराने में समर्थ है । इस पत्र में छात्र भारतीय काव्यशास्त्र और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का सम्यक अध्ययन करेंगे । साहित्य में नाटक, काव्य आदि विभिन्न विधाओं एवं रस अलंकारादि सम्वन्धी भारतीय आचार्यों के मतों का अनुशीलन कराना तथा पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त और उसके प्रमुख विद्वानों के मतों का अध्ययन इस पत्र का मुख्य लक्ष्य और उद्देश्य है । इस पत्र को चार इकाईयों में वाँटा गया है । सभी इकाई महत्त्वपूर्ण हैं और प्रश्नपत्र इन सभी इकाईयों पर आधारित होंगे । अंक विभाजन दो खण्डों में वाँटा गया है ।

उद्देश्य

- काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य के प्रयोजन तथा काव्य के प्रकारों की जानकारी के साथ-साथ साहित्य में रस सम्वन्धी विवेचन के वारे में जान सकेंगे ।
- ध्वनि की अवधारणा, उसके स्वरुप और ध्वनि के विभिन्न प्रकारों से भलीभाँति परिचित हो सकेंगे ।
- अलंकार, वक्रोक्ति एवं औचित्य सिद्धान्तों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ रस सम्प्रदाय की अवधारणा एवं रीति के आयामों के वारे में जान सकेंगे ।
- अरस्तु, प्लेटो, वर्डसवर्थ एवं कालरिज के काव्य सम्वन्धी विचारों के साथ-साथ क्रोचे की दृष्टि में कला सम्वन्धी विचार समझ पाएंगे ।
- टी.एस.इलियट (थामस स्टर्न ईलियट) एवं आई.ए.रिचर्ड्स (इवोर आर्मस्ट्रांग रिचर्ड्स)के विभिन्न काव्य सिद्धान्तों को समझ सकेंगे ।

विशेष उद्देश्य

- काव्यशास्त्र का प्रमुख उद्देश्य काव्य के तत्वों का विवेचना करना एवं काव्य के स्वरुप का निरुपण करना है, यह वता पाएंगे ।
- पूर्वीय एवं पाश्चात्य साहित्य की चिन्तनधाराओं के साथ-साथ दोनों में साम्य एवं वैषम्य के भाव को समझ सकेंगे ।
- भारतीय काव्यशास्त्र का स्वर्णयुग नवअन्वेषण काल को माना जाता है, यह वता पाएंगे ।

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ६०१-१ : काव्य के लक्षण : शव्दार्थो सहितौ काव्यम्(भामह) । तद्दोषौ शव्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि(मम्मट) । वाक्यं रसात्मकं काव्यम् (विश्वनाथ) । रमणीयार्थप्रतिपादकः शव्द काव्यम्(पण्डितराज जगन्नाथ) । काव्य हेतु : प्रतिभा, व्युत्पत्ति एवं अभ्यास । काव्य प्रयोजन । रस सिद्धान्त : रस सम्प्रदाय का इतिहास, रस की अवधारणा, रसनिष्पत्ति, रसानुभूति की प्रक्रिया । साधारणीकरण ।

इकाई २ (Unit 2)

हि ६०१-२ : ध्वनि सिद्धान्त : ध्वनि सिद्धान्त का इतिहास, काव्य की आत्मा, ध्वनि एवं अन्य सम्प्रदाय । अलंकार सिद्धान्त : अलंकार सम्प्रदाय का इतिहास, अलंकार की अवधारणा, वर्गीकरण, अलंकार एवं अन्य सम्प्रदाय । रीति सम्प्रदाय : रीति सिद्धान्त का इतिहास, रीति की अवधारणा । वक्रोक्ति सिद्धान्त : इतिहास, अवधारणा, भेद, वक्रोक्ति एवं अन्य काव्य सिद्धान्त । औचित्य सिद्धान्त : इतिहास, औचित्य एवं अन्य काव्यशास्त्र । साधारणीकरण ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ६०१-३ : प्लेटो : काव्य प्रेरणा, अनुकृति और काव्य पर आरोप । अरस्तु : अनुकृति की परिभाषा, विरेचन और प्लेटो एवं अरस्तु । वर्डस्वर्थ : काव्यभाषा का सिद्धान्त, कालरिज : कल्पना और फैंसी ।

इकाई ४ (Unit 4)

हि ६०१-४ : क्रोचे : अभिव्यंजनावाद । टी. एस. इलियट : परम्परा की परिकल्पना । परम्परा और वैयक्तिक प्रज्ञा । निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त । आई. ए. रिचर्डस : मूल्य सिद्धान्त, सम्प्रेषण सिद्धान्त । स्वच्छन्दतावाद, यथार्थवाद, नई समीक्षा ।

पाठ्य पुस्तक

१. उपाध्याय, डॉ.विश्वम्भरनाथ(२०१२), भारतीय काव्यशास्त्र,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

२. श्रीवास्तव, डा. आनन्द कुमार,(२०१२), ईस्टर्न वुक लिंकर्स, दिल्ली ।

३. डा. नगेन्द्र (१९९९), भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली ।

४. शर्मा, देवेन्द्रनाथ (२०१८), पाश्चात्य काव्यशास्त्र, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली ।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

सहायक पुस्तक

१. व्यास, भोलाशंकर (२०१३), ध्वनि सम्प्रदाय और उनके सिद्धान्त, चौखम्भा वाराणसी ।

२. गुप्त, गणपतिचन्द्र (२०००), रस सिद्धान्त का पुनर्विवेचन, लोकभारती इलाहावाद ।

३. शुक्ल, रामचन्द्र (२०१७), रस मीमांसा, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

४. मिश्र, डा. दुर्गाशंकर (१९९३), पाश्चात्य काव्यशास्त्र, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ ।

५. शर्मा, देवेन्द्रनाथ (१९९५), पाश्चात्य काव्यशास्त्र, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली ।

६. जैन, निर्मला (२००२), पाश्चात्य साहित्य चिन्तक, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली ।

७. दीप्ति, डा.श्वेता (२०१८), भारतीय एंव पाश्चात्य काव्यशास्त्र, अभिषेक प्रकाशन, नई दिल्ली ।

८. श्रीवास्तव, डा.अर्चना (१९९७), भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणशी ।

तृतीय सेमेस्टर

द्वितीय पत्र

भाषा विज्ञान

संकेतांक हि ६०२ (HIN 602)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यक्रम परिचय

यह पत्र भाषाविज्ञान के सैद्धान्तिक पक्षों, उसका इतिहास तथा कुछ प्रायोगिक पक्षों का अध्ययन कराने में सक्षम होगा । भाषा के सभी पक्षों को इसमें समाविष्ट करने की कोशिश की गई है, जिससे छात्रों को सम्यक जानकारी हासिल हो सके । इस पत्र को चार इकाइयों में बाँटा गया है । प्रश्न सभी इकाईयों पर आधारित होंगे साथ ही अंक विभाजन दो खण्डों में बाँटा गया है ।

उद्देश्य

- भाषाविज्ञान के अंगों एवं विभिन्न शाखाओं का परिचय देना ।
- भाषाविज्ञान के सैद्धान्तिक पक्ष से अवगत कराना ।
- भारतीय आर्य भाषाओं के ऐतिहासिक विकासक्रम की जानकारी देना ।
- साहित्य के अध्ययन में भाषाविज्ञान की उपयोगिता स्पष्ट करना ।
- भाषाविज्ञान के क्षेत्र को समझ सकेंगे ।
- भाषाविज्ञान शब्दों के नामकरण सम्बन्धी ज्ञान को प्राप्त करेंगे ।

विशेष उद्देश्य

- भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार को समझने के साथ-साथ इन दानों में परस्पर जो अन्तर है, इसका ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।
- मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा उनके अंतर्गत आनेवाली पालि एवं प्राकृत का अध्ययन भी कर सकेंगे ।
- आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं तथा उनकी विशेषताओं को जान सकेंगे ।

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit.1)

हि.६०२. १ : भाषा विज्ञान के सिद्धान्त : भाषा और सम्प्रेषण (सम्प्रेषण की अवधारणा , महत्त्व और प्रक्रिया) , सम्प्रेषण के विविध माध्यम , (लिखित , मौखिक , सांकेतिक , औपचारिक) । मानवेत्तर भाषा

Faculty of Humanities & S... Dean's Office

(मधुमक्खियों की भाषा , पक्षियों की भाषा , पेड़-पौंधों की भाषा) । भाषा और उच्चारण एवं अवयव सम्वन्धी जानकारी

इकाई २ (Unit 2)

हि ६०२-२ : भाषा की उत्पत्ति और प्रारम्भिक रूप, भाषा की प्रकृति , भाषा के विविध रुप , भाषा का विकास और उसके कारण , भाषा प्रयोग और संस्कृति , भाषा और अर्थ प्रतीति , भाषा के सार्वभौमिक तत्व सम्वन्धी जानकारी । संसार की भाषाएं और उनका वर्गीकरण । भारत की आर्यभाषा (प्राचीन , मध्यकालीन तथा आधुनिक), भारतवर्ष की आर्येत्तर भाषाएं (मूंडा , द्रविड , चीनी तिब्वती) । भारोपीय परिवार ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ६०२-३ : भाषा विज्ञान का इतिहास , भाषा विज्ञान के विभाग या अंग , भाषा विज्ञान अध्ययन की उपयोगिता , भाषा विज्ञान और अन्य विषय और विज्ञान से उसका सम्वन्ध (भाषा विज्ञान और व्याकरण , भाषा विज्ञान और साहित्य , भाषा विज्ञान और समाजशास्त्र , भाषा विज्ञान और तर्कशास्त्र , भाषा विज्ञान और इतिहास , भाषा विज्ञान और राजनीति विज्ञान) । शैली विज्ञान , अनुवाद विज्ञान ।

इकाई ४ (Unit 4)

हि ६०२-४ : संसार की भाषाएं और उनका वर्गीकरण , भारत की आर्यभाषा (प्राचीन , मध्यकालीन तथा आधुनिक),भारतवर्ष की आर्येत्तर भाषाएं (मूंडा , द्रविड , चीनी तिव्वती) , भारोपीय परिवार ।

पाठ्य पुस्तक

१. शर्मा, देवेन्द्रनाथ (२०१५), भाषाविज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।

२. शर्मा, राजमणि (२०००), आधुनिक भाषाविज्ञान, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।

३. तिवारी, भोलानाथ (२०१७), भाषाविज्ञान, किताव महल, इलाहावाद ।

४. सक्सेना, वाबुराम (१९४७), सामान्य भाषाविज्ञान, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

सहायक पुस्तक

१. तिवारी, उदयनारायण (२००४), भाषाशास्त्र की रूपरेखा, भारती भंडार, इलाहावाद ।

२. तिवारी, उदयनारायण (१९९७), हिन्दी भाषा: उद्गम और विकास, भारती भंडार, इलाहावाद ।

३. तिवारी, उदयनारायण (१९९७), भाषाविज्ञान का संक्षिप्त इतिहास, भारती भण्डार, इलाहावाद ।

४. वर्मा, श्रीमती सरोज (१९५८), भाषाविज्ञान एवं हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दी साहित्य संसार, नई दिल्ली ।

५. चाटुर्ज्या, सुनीतिकुमार (२००४), भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

६. वाजपेयी, उदयन (२०२१), हिन्दी भाषा और संसार, सेतु प्रकाशन, नोएडा ।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

तृतीय सेमेस्टर

तृतीय पत्र

प्रयोजनमूलक हिंदी

संकेतांक हि ६०३ (HIN 603)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यक्रम परिचय

इस पत्र में प्रयोजनमूलक हिंदी को शामिल किया गया है जिससे छात्र प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरुप व्याख्या, प्रयुक्ति का क्षेत्र, विविध शैलियाँ तथा पत्राचार के विविध प्रकारों से अवगत हो सकें। प्रस्तुत पत्र को चार इकाईयों में बाँटा गया है। अंक विभाजन दो खंडों में किए गए हैं। सभी इकाई महत्त्वपूर्ण हैं और सारे प्रश्न अनिवार्य होंगे।

उद्देश्य

- प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरुप, व्याख्या और आवश्यकता के वारे में जान पाएंगे।
- प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयुक्ति का क्षेत्र तथा विभिन्न शैलियों की चर्चा कर सकेंगे।
- प्रयोजनमूलक हिंदी की भाषाएं वता पाएंगे।
- कम्प्यूटर में हिंदी भाषा के विकास का प्रयोग तथा इन्टरनैट कार्यप्रणाली से परिचित होकर उनका सही इस्तेमाल सीख सकेंगे।
- छात्रों को पारिभाषिक शव्दावली के माध्यम से प्रयोजनमूलक हिंदी से परिचित कर सकेंगे।

विशेष उद्देश्य

- छात्रों में हिंदी भाषा एवं प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रति अभिरुचि संवर्धित करना।
- छात्रों में मौखिक एवं लिखित कौशल को विकसित करना।
- छात्रों में हिंदी भाषा के श्रवण एवं लेखन की क्षमताओं को विकसित करना।
- छात्रों की कर्मक्षेत्र सम्बन्धी कार्यक्षमता को विकसित करना।
- छात्रों में राष्ट्र के प्रति प्रेम एवं सामाजिक प्रतिवद्धता की भावना विकसित करना।

विस्तृत पाठयक्रम

इकाई-१ (Unit 1)

हि ६०३-१: प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरूप, व्याख्या, उपादेयता और चुनौतियां तथा प्रयोजनमूलक हिंदी की विभिन्न शैलियां (वोलचाल की शैली, संवाद शैली, भावात्मक शैली, साहित्यिक शैली, सामाजिक शैली तथा प्रशासनिक शैली) ।

इकाई-२ (Unit 2)

हि ६०३-२: प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयोगात्मक क्षेत्र (साहित्यिक प्रयुक्ति, वाणिज्यिक प्रयुक्ति, कार्यालयी प्रयुक्ति, राजभाषा प्रयुक्ति, विज्ञापन एवं मीडिया भाषा प्रयुक्ति, विधि एवं कानूनी भाषा प्रयुक्ति, वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा प्रयुक्ति) । मुहावरे और लोरोक्तिया : अर्थ एवं परिभाषा । शव्द शुद्धि, वाक्य शुद्धि और शव्द ज्ञान (तत्सम्, तद्भव, देशज तथा विदेशज) ।

इकाई-३ (Unit 3)

हि ६०३-३: प्रयोजनमूलक हिंदी : पत्रलेखन, प्रारुपण (मसौदा, ड्राफ्ट), टिप्पण, प्रतिवेदन, पत्राचार का अर्थ एवं प्रकार (व्यावहारिक पत्र, व्यावसायिक पत्र, सरकारी पत्र आदि) । रोजगार सम्वन्धी आवेदन पत्र की लेखन विधि और उसके नमूने, सार-संक्षेपण का आशय तथा विधि ।

इकाई-४ (Unit 4)

हि ६०३-४ : कम्प्युटर में हिंदी प्रयोग : कम्प्युटर की संरचना, कम्प्युटर में हिंदी भाषा के विकास का प्रयोग । इन्टरनैट कार्यप्रणाली (इनटरनैट और हिंदी ईमेल, एचटीटीपीएस (हाइपर टेक्स्ट ट्रान्सफर प्रोटोकल सेक्यूरिटी) । डव्ल्यू डव्ल्यू डव्ल्यू (वर्ल्ड वाइड वेव) । हिंदी व्लॉग, फेसवुक-पेज, ई-पुस्तकालय । पारिभाषिक शव्दावली : अर्थ, स्वरुप एवं उदाहरण ।

पाठ्य पुस्तक

१. श्रीवास्तव, रविन्द्रनाथ (१९९४), प्रयोजनमूलक हिंदी, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगर ।
२. श्रीवास्तव, गोपीनाथ (२०००), सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग, लोकभारती प्रकाशन इलाहावाद ।
३. कंसल, हरिवावू (१९८६), प्रशासनिक हिंदी निपूणता, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।
४. गोदरे, विनोद (२०२४), प्रयोजनमूलक हिंदी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।

सहायक पुस्तक

१. शर्मा, वी. डी. (२०२१), प्रयोजनमूल हिंदी, ओमेगा पव्लिकेशन, नई दिल्ली ।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

२. मंजुनाथ, डॉ.एस.ए (२०२२), प्रयोजनमूलक हिंदी, नोशन प्रेस, चेन्नई ।

३. भाल्टे, दंगल (२०२३), प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धान्त और प्रयोग, वाणी प्रकाशन ग्रुप, दिल्ली ।

४. जैन, डा. संजीता (२०१९), प्रयोजनमूलक हिंदी, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल ।

५. गुप्ता, डा. गार्गी (प्र.सं.) एवं टंडन, डा. पूरनचंद (सं.), (१९९६), पारिभाषिक शब्दावली की विकासयात्रा, भारतीय अनुवाद परिषद, दिल्ली ।

६. शर्मा, डा. विजय (२००४), पारिभाषिक पदार्थ संग्रह, भारतीय विधा संस्थान, वाराणसी ।

७. पारीक, सीताराम (२०११), प्रशासनिक पारिभाषिक शव्दाकोश, युनिक ट्रेडर्स, जयपुर ।

तृतीय सेमेस्टर

चतुर्थ पत्र

अनुवाद : सिद्धान्त और प्रयोग

संकेतांक हि ६०४ (HIN 604)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यक्रम परिचय

अनुवाद की महत्ता सदियों से रही है और यह आज के परिप्रेक्ष्य में भी सांदर्भिक है । इसकी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए इस पत्र में इसे शामिल किया गया है । प्रस्तुत पत्र को चार इकाईयों में बाँटा गया है । अंक विभाजन दो खंडों में किए गए हैं । सभी इकाई महत्त्वपूर्ण है और सारे प्रश्न अनिवार्य होंगे ।

उद्देश्य

- अनुवाद की प्रवृत्ति, महत्त्व, प्रकार, अनुवाद और भाषा का संवंध, स्रोतभाषा, और लक्ष्य भाषा, अनुवाद की परंपरा तथा अनुवाद और रोजगार पर प्रकाश डाल सकेंगे ।
- अनुवाद की प्रक्रिया के विभिन्न प्रारूपों, अनुवाद के क्षेत्र, अनुवाद की सीमाएं एवं समस्याएं तथा इसकी विभिन्न प्रत्युक्तियों के वारे में जान पाएंगे ।
- मशीन से अनुवाद की प्रक्रिया की समझ विकासित होगी ।
- साहित्यिक और कार्यालयी अनुवाद से क्या तात्पर्य है और कैसे अनुवाद करें, यह वता पाएंगे ।
- अनुवाद की क्षमता कैसे विकसित किया जाय वता पाएंगे ।

विशेष उद्देश्य

- अनुवाद को समझने की दृष्टियों को उल्लेख कर सकेंगे ।
- विभिन्न प्रयुक्ति क्षेत्रों के अनुवाद की वारीकियां को समझ सकेंगे ।
- अनुवाद के संदर्भ में उनकी उपपयोगिता से परिचित होकर उनका सही इस्तेमाल सीख सकेंगे ।
- पुनरीक्षण की आवश्यकता तथा उनके विभिन्न पहलुओं की चर्चा कर सकेंगे ।

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ६०४-१: अनुवाद : अर्थ, तात्पर्य परिभाषा, प्रकार । अनुवाद की संकल्पना, स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा । अनुवाद की परंपरा (अनुवाद का भारतीय एवं पश्चिमी सिद्धान्त)। अनुवाद और रोजगार । अनुवाद का स्वरूप : कला अथवा विज्ञान ।

इकाई २ (Unit 2)

हि ६०४-२: अनुवाद की प्रक्रिया, और प्रविधि विश्लेषण । अनुवाद के क्षेत्र । अनुवाद की सीमाएं एवं समस्याएं । अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धान्त । अनुवाद की विभिन्न प्रयुक्तियां । अनुवाद के गुण ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ६०४-३: साहित्यक अनुवाद : काव्यानुवाद एवं भावानुवाद । कार्यालयी अनुवाद । जनसंचार माध्यम और अनुवाद । ज्ञान विज्ञान का साहित्य और अनुवाद । वैंक, वित्त और वाणिज्य के अनुवाद ।

इकाई ४ (Unit 4)

हि ६०४-४: अनुवाद पुनरीक्षण/मूल्यांकन : तात्पर्य, आवश्यकता । मशीनी अनुवाद और उसकी समस्याएं । वैश्विकरण और अनुवाद । लिप्यंतर ।

पाठ्य पुस्तक

१. तिवारी, भोलानाथ । १९७२ ।, अनुवाद विज्ञान, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली

२. समीर, श्रीनारायण । २०१२ ।, अनुवाद प्रक्रिया और तकनीक और समस्याएं, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

३. पालीवाल, डा. रीतारानी । २०१६ ।, अनुवाद की प्रक्रिया और परिदृश्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

४. कुमार, डा. सुरेश । २०१६ ।, अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

सहायक पुस्तक

१. कुंचिपादम, सीता । १९९१ ।, वैंकों में अनुवाद प्रविधि, भारतीय अनुवाद परिषद्, दिल्ली ।

२. तिवारी, भोलानाथ एवं कुमार, कृष्ण । १९८७ ।, कार्यालयी अनुवाद की समस्या, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली ।

३. चौधरी, डा. प्रवीण । २०१२ ।, कार्यालयी भाषा और, अनुवाद, विनय प्रकाशन, अहमदावाद ।

४. अग्रवाल, कुसुम । १९९९ ।, अनुवाद शिल्प : समकालीन सन्दर्भ, साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली ।

५. गुप्ता, नीता (प्रधान सम्पादक, १९९९), अनुवाद मूल्यांकन, भारतीय अनुवाद परिषद, दिल्ली ।

६. भाटिया, डा. कैलाशचंद (२०२३), अनुवाद कला, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली ।

Humanities & Social Sciences Dean's Office

तृतीय सेमेस्टर

पंचम पत्र

पत्रकारिता

संकेतांक हि ६०५ (HIN 605)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यक्रम परिचय

पत्रकारिता के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इसे अनिवार्य पत्र के रूप में रखा गया है । इस पत्र में पत्रकारिता के इतिहास और सैद्धान्तिक पक्ष के साथ ही उसके प्रयोग पक्ष की भी जानकारी दी गई है । साथ ही नेपाल में हिंदी पत्रकारिता का क्या इतिहास रहा है इसकी जानकारी भी देने का प्रयास किया गया है । प्रस्तुत पत्र को चार इकाईयों में वाँटा गया है । सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे और अंक विभाजन तीन खंडों में किया गया है ।

उद्देश्य

- पत्रकारिता की महत्ता एवं उपादेयता को सहज ही समझ पाएंगे ।
- समाचार लेखन, तथा साक्षात्कार क्या है और कैसे होता है जान सकेंगे ।
- पत्रकार के नये आयाम तथा समाचार माध्यम के मौजूदा रुझान क्या है जान सकेंगे ।
- इलेक्ट्रोनिक मीडिया तथा सोशल मीडिया के वारे में जान सकेंगे ।
- प्रमुख संवाद समितियों के वारे में जान सकेंगे ।

विशेष उद्देश्य

- पत्रकारिता की विविध प्रासंगिकताओं के वारे में जान सकेंगे ।
- विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयोग को सहज ही समझ पाएंगे ।

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ६०५-१: हिंदी पत्रकारिता का ऐतिहासिक पक्ष : उद्भव और विकास । हिंदी के प्रमुख पत्र उदन्त मार्तण्ड, कवि वचनसुधा, सरस्वती, हंस । हिंदी के प्रमुख पत्रकार (वालकृष्ण भट्ट, महाविर प्रसाद द्विवेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी) । आधुनिक पत्रिकाएं (अमर उजाला, द हिन्दुस्तान दैनिकजागरण नया ज्ञानोदय ।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

इकाई २ (Unit 2)

हि ६०५-२: हिंदी पत्रकारिता का सैद्धान्तिक पक्ष : पत्रकारिता की महत्ता एवं उपादेयता । समाचार का अर्थ एवं प्रकार । समाचार लेखन कला : शीर्षक, इन्ट्रो । सम्पादन के आधारभूत तत्व : सम्पादकीय लेखन, फीचर लेखन एवं उनकी विशेषताएं । जनसंचार का स्वरुप एवं अवधारणा । इलेक्ट्रोनिक मीडिया का स्वरुप : रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा । न्यू मीडिया (साइवर क्राइम, सोशल मीडिया) । मुद्रण कला का सामान्य ज्ञान ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ६०५-३: पत्रकारिता का प्रयोगात्मक पक्ष : पत्रकारिता का व्यावहारिक ज्ञान (समाचार लेखन, शीर्षकीकरण, फीचर लेखन, विज्ञापन लेखन, सम्पादकीय लेखन, साक्षातकार, पत्रकार वार्ता) । प्रूफ संशोधन । पत्र की पृष्ठ सज्जा । पत्रों के विभिन्न स्तम्भ । आवरण सज्जा ।

इकाई ४ (Unit 4)

हि ६०५-४: नेपाल में हिंदी पत्रकारिता का इतिहास । मुख्य पत्रपत्रिकाएं (दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक एवं मासिक) । साहित्यिक पत्रिका (साहित्यलोक) । हिंदी पत्रिका की संभावनाएं । प्रमुख सम्पादक ।

पाठ्य पुस्तक

१. मिश्र, राजेश्वर, २००६, सम्पादन कला, डायमंड वुक्स, नई दिल्ली ।

२. आर्य, पी. के.,२०१२, फीचर लेखन, विद्या विहार, नई दिल्ली ।

३. जैन, प्रो. रमेश,२०११, प्रिन्ट मीडिया लेखन, मंगलदीप पव्लिकेशन, जयपुर ।

४. जोशी, डा. सुशीला,१९९१, हिंदी पत्रकारिता विकास और विविध आयाम, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ, अकादमी, जयपुर ।

सहायक पुस्तक

१. गुप्ता, ओम,२००६, लेखन, सम्पादन और मुद्रण, कनिका पव्लिकेशन डिस्ट्रिव्यूटर्स, नई दिल्ली ।

२. पंत, एन. सी., २००७, हिंदी पत्रकारिता का विकास, राधा पव्लिकेशन, नई दिल्ली ।

३. तिवारी, अर्जुन,२०२३, हिंदी पत्रकारिता का वृहद इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

४. मिश्र, विहारी, २०२२, हिंदी पत्रकारिता, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली ।

५. पाण्डेय, रत्नाकर (२०१२), हिन्दी पत्रकारिता और समाचार पत्रौं की दुनिया, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली ।

६. कुमारी, सरोज (सं. २०१९), हिन्दी पत्रकारिता चुनौतियां और समाधन, भावना प्रकाशन, दिल्ली ।

७. रहमतुल्लाह, डा. एम. (२०१९), मीडिया और जनसंचार, भावना प्रकाशन, दिल्ली ।

चतुर्थ सेमेस्टर

प्रथम पत्र

संस्कृत साहित्य

संकेतांक हि ६५१ (HIN 651)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यक्रम परिचय

हिन्दी की जननी भाषा संस्कृत है और इसका एक समृद्ध साहित्य है । संस्कृत साहित्य और उसके इतिहास की सामान्य जानकारी हिन्दी छात्रों के लिए आवश्यक समझते हुए इस पत्र को तैयार किया गया है क्योंकि हिन्दी की अनेक परम्पराओं का स्रोत प्राचीन संस्कृत भाषा और साहित्य से उपलब्ध होता है । इस पत्र को चार इकाईयों में वाँटा गया है । इन चारों इकाईयों पर ही आधारित प्रश्नपत्र पूछे जाएँगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे । अंक विभाजन दो खण्डों में किया गया है ।

उद्देश्य

- वेद एवं वैदिक साहित्य की महत्ता से परिचित हो सकेंगे ।
- संस्कृत के गद्य साहित्य तथा प्रमुख साहित्यकारों से परिचित हो सकेंगे ।
- गीतिकाव्य का विकासक्रम इसकी महत्ता एवं प्रमुख गीतिकाव्यों के बारे में जानकारी कर पाएंगे ।
- चम्पूकाव्य की उत्पत्ति और विकास का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे ।
- हितोपदेश की रचना के आधार तथा मित्रलाभ की कथावस्तु से परिचित हो सकेंगे ।
- मृच्छकटिकम के रचनाकार, रचनाकाल और इसकी कथावस्तु से परिचित हो सकेगे ।

विशेष उद्देश्य

- संस्कृत भाषा और साहित्य के अध्ययन की दिशा में संस्कृत साहित्य के इतिहास का अधिक महत्व है, यह वता पाएंगे ।
- वैदिक साहित्य आर्यों और वैदिक युग पर सवसे महत्वपूर्ण सूचना स्रोतों में से एक है, इसके वारे में जानकारी कर पाएंगे ।
- लौकिक संस्कृत साहित्य की रचनाएं यथा- वाल्मीकिय रामायण, महाभारत तथा अन्य महाकाव्यों तथा काव्यकारों से परिचित हो सकेंगे ।
- संस्कृत के गद्य साहित्य और काव्य की सुदीर्घ एवं वैविध्यमयी परम्परा से अवगत होंगे ।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

विस्तृत पाठ्यक्रम :

इकाई १ (Unit 1)

हि ६५१-१ : संस्कृत साहित्य का इतिहास और उसका महत्व । वैदिक साहित्य : संहिता, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद और वेदांग का महत्तव एवं उपयोगिता ।

इकाई १ (Unit 2)

हि ६५१-२ :लौकिक साहित्य : वाल्मीकिय रामायण और महाभारत अन्य महाकाव्य और काव्यकार एवं अन्य विधाओं का सामान्य परिचय ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ६५१-३ : गीतिकाव्य, काव्य नाटक, चम्पुकाव्य परिचय, उद्रभव और विकास, संस्कृत गद्य साहित्य का उद्रभव और विकास एवं प्रमुख संस्कृत आचार्यों का साहित्यिक परिचय ।

इकाई ४ (Unit 4)

हि ६५१-४ : हितोपदेश(मित्रलाभ), शुद्रक रचित मृच्छकटिकम, मेघदूत(प्रथम खण्ड)

पाठ्य पुस्तक

१. कीथ, ए. वी. (२०१६), संस्कृत साहित्य का इतिहास, मोतीलाल, वनारसीदास दिल्ली

२. उपाध्याय, वलदेव (२०१७), संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा मन्दिर, वाराणसी

३. व्यास, भोलाशंकर (१९५५), संस्कृत कवि दर्शन, चौखम्भा वाराणसी ।

४. आचार्य, नारायण राम (२०१७), हितोपदेश, निर्णय सागर, मुम्वई ।

सहायक पुस्तक

१. शुद्रक (२०२४), मृच्छकटिकम्, चौखम्वा प्रकाशन, नई दिल्ली ।

२. कालिदास (२०२४), मेघदूत, चौखम्वा प्रकाशन, नई दिल्ली ।

३. भुरिया, कुसुम (२००६), संस्कृत चम्पू-काव्य, प्रतिमा प्रकाशन, दिल्ली ।

४. प्रसाद, विश्वानाथ (२०११), आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य समीक्षा/विवेचना, विश्वविधालय प्रकाशन, वाराणसी ।

५. खरे, विष्णु (१९९९), महाकाव्य विमर्श, वाणी प्रकाशन ग्रुप, नई दिल्ली ।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

चतुर्थ सेमेस्टर

द्वितीय पत्र

नेपाल का हिन्दी साहित्य एवं प्रवासी हिन्दी साहित्य

संकेतांक हि ६५२ (HIN 652)

क्रेडिट आवर–३

पाठ घंटा-४८

पाठ्यांश परिचय

नेपाल में हिन्दी का क्या इतिहास रहा है छात्रों को इस पत्र में यह अवगत कराया गया है । प्रवासी हिन्दी साहित्य, हिन्दी साहित्य में जुड़ती एक नूतन विधा एवं चेतना है जो न केवल एक नई विचारधारा है वल्कि एक नई अंर्तदृष्टि भी है । छात्र प्रवासी हिन्दी साहित्य से परिचित हों इसी लक्ष्य के साथ प्रवासी हिन्दी साहित्य को भी शामिल किया गया है । इस पत्र को चार इकाईयों में बाँटा गया है । प्रश्न चारों इकाईयों पर आधारित होंगे । सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे । अंक विभाजन दो खण्डों में किया गया है ।

उद्देश्य

- नेपाल में हिंदी साहित्य का इतिहास, अवस्था एवं आवश्यकता के वारे में जान पाएंगे ।
- नेपाल के प्रमुख हिंदी लेखक तथा उनकी कृतियों से परिचित हो सकेंगे ।
- नेपाल के हिंदी कवि और उनकी रचनाओं से परिचित हो सकेंगे ।
- नेपाल के हिंदी साहित्य के चयनित कविता, कहानी, उपन्यास, निवंध आदि का अध्ययन कर सकेंगे ।
- प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा तथा इतिहास की समझ का मूल्याकंन कर सकेंगे ।
- प्रवासी हिंदी साहित्य की काव्य कृतियों का मूल्यांकन कर सकेंगे ।
- प्रवासी हिंदी साहित्य की दिशा एवं दशा के वारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।

विशेष उद्देश्य

- नेपाल का हिंदी साहित्य की विविध साहित्यिक अभिव्यक्तियों की छात्रों में समझ विकसित कर पाएंगे ।
- नेपाल में लिखे जा रहे हिंदी साहित्य और उसकी संरचना से रुवरु कर पाएंगे ।
- छात्रों को भारत के वाहर लिखे जा रहे हिंदी साहित्य और उसकी संरचना से रुवरु कर पाएंगे ।
- छात्रों को हिंदी साहित्य के वैश्विक परिदृश्य को समझने की दृष्टि प्रदान कर सकेंगे ।
- हिंदी भाषा के महाशक्ति के रूप में वढ़ते कदम से परिचित हो पाएंगे ।

- प्रवासी हिंदी साहित्य की विविध साहित्यिक अभिव्यक्तियों की छात्रों में समझ विकसित कर पाएंगे ।

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ६५२-१ : नेपाल में हिन्दी का इतिहास, अवस्था एवं आवश्यकता । प्रवासी हिन्दी साहित्य का इतिहास और अवस्था । नेपाल के प्रमुख हिन्दी लेखक तथा उनकी कृतियों का परिचय नेपाल में हिन्दी साहित्य की विविध विधाएँ एवं साहित्यिक प्रवृत्तियाँ तथा प्रवासी हिन्दी साहित्यकार यथा : सुषम वेदी, पुर्णिमा वर्मन, तेजेन्द्र शर्मा, उषा प्रियम्वदा, अलका शर्मा,रामदेव धुरंदर, अभिमन्यु अनन्त आदि का व्यक्तित्व और कृतित्व ।

इकाई २ (Unit 2)

हि ६५२-२ :

संस्मरण और निबन्धः

निवन्ध : वी.पी कोइराला–रेणु और मैं । फणीश्वरनाथ रेणु–नेपाल मेरो सानी आमा । डा. कृष्णचन्द्र मिश्र–नेपाल में हिन्दी प्रजातंत्रोत्तर परिदृश्य संस्मरण ।

संस्मरण : जनकलाल शर्मा –राहुल के साथ वे दिन । अनुवाद प्रस्तुति–कृष्णचन्द्र मिश्र । भिक्षु सुदर्शन–नेपाल में राहुल । प्रा.डा.सूर्यनाथ गोप–स्मृतियों के झरोखे से डा. मिश्र । डा. गौरीशंकर लाल दास - यादौं के गलियारे में (चार सौ की वारात) ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ६५२-३ : नेपाल के हिन्दी साहित्य की चयनित कविता, कहानी का अध्ययन । नेपाल के हिन्दी कवि और उनकी चयनित कविताएँ: चित्तधर हृदय(प्रेमपंथ और संगम)/केदारमान व्यथित(गीत और महत्तवाकांक्षा) । रामहरि जोशी(उपालम्भ) । डा. शिवशंकर यादव(आहत) । प्रा.डा.सूर्यनाथ गोप(पीड़ा का साम्राज्य) । डा. रामदयाल राकेश (यही हमारा जीवन है) । सुन्दर झा शास्त्री(तुलसी तुष्पदी) । विश्वेश्वरप्रसाद कोईराला(वम्वई के प्रति) । वीरेन्द्र मिश्र(अवस्था और सलाह) । राजेश्वर नेपाली(जय जनक जय जानकी) । गोपाल अश्क (कहर की वात) । प्रा. डा. आशा सिन्हा (देव यह कैसी याचना) । काव्य शैली, भाव एवं व्याख्या पक्ष ।

कहानी : डा. संजीता वर्मा रचित 'गुरुदक्षिणा' कहानी संग्रह से चयनित पाँच कहानियाँ (गुरू दक्षिणा, कली, क्या मै कायर हूँ, सेकुआ का मांस, कुंवारी सुहागन), भाषा शैली, कथोपकथन, भावप्रवणता, चरित्रचित्रण एवं व्याख्या पक्ष ।

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

इकाई ४ (Unit 4)

हि ६५२-४: धुंस्वा सायमी रचित उपन्यास– 'मैं दासी मै सराय' । प्रवासी हिन्दी साहित्यकार सुषम बेदी का उपन्यास 'हवन' का अध्ययन । भाषा शैली, कथोपकथन, भावप्रवणता, चरित्रचित्रण एवं व्याख्या पक्ष ।

प्रवासी साहित्यकार : तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'देह की कीमत' । पूर्णिमा वर्मन की 'नमस्ते' का अध्ययन । भाषा शैली, कथोपकथन, भावप्रवणता, चरित्रचित्रण एवं व्याख्या पक्ष ।

सहायक पुस्तक

१. मिश्र, कृष्णचन्द्र,२०२३ नेपाल में हिन्दी, (सं.दीप्ति श्वेता) द्वितीय संस्करण) डा.कृष्णचन्द्र पव्लिकेशन, काठमान्डू ।

२. ठाकुर, डॉ. उषा (१९९८), हिन्दी और नेपाली साहित्य के प्रतिनिधि हस्ताक्षर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

३. गोप. डॉ. सूर्यनाथ (१९९४), नेपाल में हिन्दी और हिन्दी साहित्य, किताव महल, इलाहावाद ।

४. राकेश, डॉ. रामदयाल, नेपाल के हिन्दी लेखक, प्राच्य प्रकाशन, वाराणसी ।

पाठ्यपुस्तक

१. सायमि धुस्वा, मैं दासी मैं सराय,

२. दीप्ति, श्वेता (सं.२०२४), नेपाल की चयनित रचनाएँ, रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, ।

३. वर्मा, डा.संजीता (२०१७), गुरुदक्षिणा, प्रकाशक भाषा संगम, इलाहावाद ।

४. वर्मा, डॉ.संजिता (२०७७), रचना संचयन, भाषा संगम, इलाहावाद ।

५. वेदी, सुषम् (२०२०), हवन, पेनगुइन वुक्स इंडिया, दिल्ली ।

६. कुमारी डॉ. कमलेश (सं) (२०१८), प्रवासी कथाकार तेजेन्द्र शर्मा, मुद्दे और चुनौतियां, साहित्य संचय, दिल्ली ।

७. पाण्डेय, डॉ. दिपक कुमार (२०२१), मॉरीशस लेखक: रामदेव धुर-धर साक्षात्कारके आइने में, स्वाराज प्रकाशन, नई दिल्ली ।

८. दास, डा. गौरी शंकर लाल, (२०२४) यादों के गलियारें में, अस्मिता प्रकाशन, ललितपुर ।

९. सं. मिथिलेश कान्ति वर्मा, संजीता वर्मा, (२०२४) नेपाल में हिन्दी: स्थिति और सम्भावनाएँ, हिन्दी वुक सेन्टर, नई दिल्ली ।

of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

चतुर्थ सेमेस्टर

तृतीय पत्र

समकालीन साहित्य

(ऐच्छिक पत्र)

संकेतांक हि ६५३-१ (HIN 653-1)

क्रेडिट आवर- ३
पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम परिचय

समकालीन हिन्दी साहित्य अपने स्वरूप में अत्यन्त व्यापक, गहन, गंभीर एवं चुनौतीपूर्ण है । भूमण्डलीकरण का वैश्विक ग्राम में अन्तरण परत-दर-परत उसके स्वरुप को और अधिक वैविध्यपूर्ण वना रहा है । सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में जीवन का कोई भी भाग वैश्विक प्रभाव से अछूता नहीं रहा । इसलिए नवीन चिन्तन के साथ-साथ वादों, विमर्शों और आन्दोलनों का एक प्रवाह निरन्तर गतिमान है । इस दौर ने नवीनता के साथ वैज्ञानिकता और सारग्राहयता से साहित्य और विचारों के क्षेत्र को व्यापकता प्रदान की है । छात्रों में समकालीन सन्दर्भों, परिस्थितियों तथा प्रवृत्तियों के विश्लेषण समझ हेतु समकालीन साहित्य को ऐच्छिक पत्र के रूप में रखा गया है ।

उद्देश्य

- समकालीन और समकालीनता का अभिप्राय समझ पाएंगे
- समकालीन की अवधारणा समझ सकेंगे ।
- समकालीन कवियों की प्रमुख काव्य प्रवृत्तियों की समझ वना सकेंगे ।
- समकालीन काव्य दृष्टि की विकास प्रक्रिया पर विचार कर सकेंगे ।
- समकालीन महिला कथाकारों की रचनाओं से अवगत होंगे ।
- दलित विमर्श एवं स्त्री विमर्श की अवधारणाओं से परिचित हो सकेंगे ।

विशेष उद्देश्य

- प्रमुख समकालीन विचारधाराओं का सविस्तार परिचय प्राप्त कर सकेंगे ।
- समकालीन साहित्य समाज के वर्तमान मूल्यों और विश्वासों को प्रतिविम्वित करता है, जो सदैव बदलते रहते हैं, यह जान पाएंगे ।
- समकालीन सन्दर्भों, परिस्थितियों तथा प्रवृत्तियों के विश्लेषण की समझ विकसित होगी ।
- समकालीन कथा साहित्य के केन्द्र मे आए स्त्री, दलित एवं हाशिये के अन्य समाज के महत्व को समझ सकेंगे ।

Dean's Office

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ६५३-१ : समकालीन साहित्य का इतिहास । समकालीन साहित्य की अवधारणा, स्वरूप एवं परिभाषा । समकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियां । प्रमुख कवि एवं लेखक ।

इकाई २ (Unit 2)

हि ६५३-२ : समकालीन कविता के सोपान । प्रमुख कवि : केदारनाथ अग्रवाल एवं उनकी रचना 'युग की गंगा' काव्य संग्रह (पांच कविताएं– युग की गंगा, नयी वस्तियां, शान्ति निकेतन, लम्वी, ऊँची, नव संसार वसाएगी ही) । सुदामा पाण्डे धुमिल एवं उनकी रचना 'प्रजातन्त्र' काव्य संग्रह (पांच कविताएं – कविता के भ्रम में, घर में वापसी, मुक्तिका रास्ता, चुनाव, लोकतन्त्र)। महिला कथाकार : मृणाल पाण्डेय और चित्रा मुद्गल । एक स्त्री का विदागीत(कहानी संग्रह) से मृणाल पाण्डेय की पांच कहानिया ,भूख, कहानी संग्रह से चित्रा मुदगल की पांच कहानियां । समकालीन उपन्यास साहित्य के प्रमुख उपन्यासकार एवं उनके उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय, समकालीन कहानी साहित्य के प्रमुख कहानीकार एवं उनकी कहानी कला ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ६५३-३ : समकालीन दलित विमर्श : अवधारणा एवं स्वरूप । दलित विमर्श के प्रमुख लेखक मोहनदास नौमिशराय एवं उनका उपन्यास 'जख्म हमारे' ।

इकाई ४ (Unit 4)

हि ६५३-४ : स्त्री विमर्श : अवधारणा एवं स्वरूप । स्त्री विमर्श की लेखिका मृदुला गर्ग का उपन्यास 'कठगुलाव' एवं मन्नु भंडारी का उपन्यास 'महाभोज' ।

पाठ्य पुस्तक

१. भन्डारी, मन्नु (२०२१), महाभोज, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।

२. मुदगल, चित्रा (२०२१), भूख, ज्ञानगंगा, दिल्ली ।

३. अग्रवाल, केदारनाथ (१९४७), युग की गंगा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

४.धुमिल, पाण्डेय, सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।

सहायक पुस्तक

१. उपाध्याय, डॉ. विश्वम्भरनाथ (२०२४), समकालीन साहित्य का भूमिका, रचना प्रकाशन, जयपुर ।

२. पालीवाल, कृष्णदत्त (२०१८), समकालीन साहित्य विमर्श, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली ।

३. चतुर्वेदी, डॉ. रामस्वरूप (२००८), समकालीन साहित्य विविध परिदृश्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।

४. पाण्डेय, मृणाल (२००३), एक स्त्री का विदागीत, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।

५. नैमिशराय, मोहनदास (२०११), जख्म हमारे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।

६. वालमीकि, ओमप्रकाश (२०२०), सलाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।

७. कस्तवार, रेखा (२०१३), स्त्री चिन्तन की चुनौतियां, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

८. जोशी, राजेश (२०१०), समकालीनता और साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

लोक साहित्य

(ऐच्छिक पत्र)

संकेतांक हि ६५३-२ (HIN 653-2)

क्रेडिट आवर- ३
पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम परिचय

लोक साहित्य लोक जीवन की अभिव्यक्ति है । किसी समाज के पुरातन रूप को झाँक कर देख लेने का उत्तम साधन लोक साहित्य है । लोक साहित्य के द्वारा ही युग-युग की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का परिचय मिलता है । एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचने वाले लोक साहित्य की परंपराएं आज हम तक पहुंची है । अतः छात्रों को इस परंपरा को वर्तमान संदर्भ से जोड़कर उसमें परस्पर समन्वय स्थापित कर अध्ययन करना आवश्यक है ताकि हमारे पुरखों की परम्पराएं केवल सांस्कृतिक धरोहर तथा वीते हुए कल की आवाज मात्र न रहकर युग-युग तक जीवन्त सर्जना वनकर रहे । इसी लक्ष्य के साथ इस पत्र को भी प्रमुखता के साथ ऐच्छिक पत्र में जगह दी गई है । प्रश्न चारों इकाईयों पर आधारित होंगे । सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे । अंक विभाजन दो खण्डों में किया गया है ।

उद्देश्य

- लोक साहित्य की अध्ययन पद्धतियों से अवगत हो पाएंगे ।
- लोक साहित्य और लोक संस्कृति के वारे में जानकारी प्राप्त कर पाएंगे ।
- लोक साहित्य के संकलन, संरक्षण की चुनौतियों का रेखांकन कर पाएंगे ।
- लोक साहित्य की विशेषताओं को स्पष्ट कर पाएंगे ।
- लोक साहित्य की अवधारणा एवं स्वरुप को समझ सकेंगे ।
- लोक साहित्य की भाव गम्भीरता, सांस्कृतिक रूप और सहज अभिव्यक्ति का परिचय प्राप्त कर पाएंगे ।

विशेष उद्देश्य

- वर्तमान वैश्वीकरण के युग में लोक साहित्य के अध्ययन से छात्र अपने अंचल विशेष के प्रभावी रूप से लेकर वैश्विक संदर्भ से जुड सकेंगे ।
- लोक में पीढियों से चली आ रही ज्ञान परंपरा का शास्त्र के वरक्स महत्व स्थापित कर सकेंगे ।
- धीरे-धीरे लुप्त हो रहे लोक साहित्य के संकलन एवं संरक्षण की प्रविधियां समझ सकेंगे ।
- इतिहास, समाज, साहित्य और संस्कृति के नवीन अध्ययनों हेतु लोक आधारित पाठ का महत्व वता पाएंगे ।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ६५३-१ : लोक साहित्य की अवधारणा, लोक साहित्य का अर्थ, स्वरुप एवं परिभाषा । लोक साहित्य के प्रारम्भिक और विकासात्मक स्वरुप । लोक साहित्य का महत्व । लोक संस्कृति और लोक साहित्य में अन्तरसम्बन्ध । लोक साहित्यका क्षेत्र । लोकभाषा : लोक मुहावरे, कहावते, लोकोक्तियां ।

इकाई २ (Unit 2)

हि ६५३-२ : लोक साहित्य का क्षेत्र । लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य । लोक साहित्य एवं परिनिष्ठित साहित्य : सम्वन्ध एवं भेद । लोक, साहित्य के संग्रह की आवश्यकता । लोक साहित्य के संरक्षण की चुनौतियां । लोक साहित्य के संकलन एवं संरक्षण की प्रविधियां । लोक साहित्य की अध्ययन पद्धतियां ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ६५३-३ लोक साहित्य की प्रवृत्तियां : देवी देवताओं और प्राकृतिक उपलब्धियों पर आधारित साहित्य, लोकाचार के लिए रचित लोक साहित्य, वैज्ञानिकता पर आधारित साहित्य, जातीय लोक साहित्य । लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास । लोक नृत्य और लोकगीत, संस्कार गीत, ऋतुगीत व्रत गीत । लोक साहित्य का महत्व : सामाजिक महत्व, धार्मिक महत्व, ज्ञान एवं नीति विषयक महत्व, सांस्कृतिक महत्व, भाषा वैज्ञानिक महत्व । लोक साहित्य की उपयोगिता ।

इकाई ४ (Unit 4)

हि ६५३-४ लोक साहित्य की विविध विधाएं : लोक गीत-परिभाषा एवं विशेषताएं । लोक गीतों का वर्गीकरण । लोककथा- परिभाषा एवं विशेषताएं । लोक कथा और पौराणिक कथा में अन्तर । लोकगाथा- परिभाषा एवं विशेषताएं । लोकगाथाओं की विभिन्न श्रेणियां । लोक नाट्य, परिभाषा एवं विशेषताए । लोक नाट्य : रामलीला, रासलीला, कीर्तनियां नाच, नौटंकी ।

पाठ्य पुस्तक

१. उपाध्याय, कृष्णदेव (२०१९), लोक साहित्य की भूमिका, लोक भारती तथा साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहावाद ।
२. शर्मा, डा. श्रीराम (२०२०), लोक साहित्य सिद्धान्त और प्रयोग, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
३. डा. स्वर्णलता (१९७९), लोक साहित्य विमर्श, चम्पालाल रांका एण्ड कंपनी, जयपुर
४. परमार, श्याम (१९५४), भारतीय लोक साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
५. कल्ला, डा. नन्दलाल (२०१८), हिन्दी का प्रादेशिक लोक साहित्य, राजस्थानी, ग्रन्थागार, राजस्थान ।

सहायक पुस्तक

१. मिश्रा, कल्पना (२०२१), नाटक, लोक नाट्य और रंगमंच, इंक प्रकाशन, दिल्ली ।
२. द्विवेदी, डा. हिमांशु (२०१६), भारतीय लोक नाट्य, अरुण, चंडीगढ ।
३. परमार, श्याम (१९७२), लोक साहित्य विमर्श, कृष्णा व्रदर्श, दिल्ली ।
४. शम्वर, श्रीवास्तव, डा. राजेश (२०१६), लोक साहित्य, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल ।

सृजनात्मक लेखन

(ऐच्छिक पत्र)

संकेतांक हि ६५३-३ (HIN 653-3)

क्रेडिट आवर- ३
पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम परिचय

छात्रों की रचनात्मकता को विकासित करने के साथ ही विचारशील चिंतन की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने का लक्ष्य है । विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी में प्रवावी लेखन कला से छात्रों को अवगत कराना तथा सृजनात्मक लेखन के नवाचारों से परिचित कराना भी इसका लक्ष्य रहा है । रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम के यह कोर्स एक ओर सृजनात्मकता के आयामों को उन्मीलित कराने की ओर उन्मुख है, दूसरी ओर लेखन के विविध क्षेत्रों में कार्य करने योग्य क्षमता विकसित करने का लक्ष्य लेकर निर्मित किया गया है । इस पत्र को चार इकाईयों में वांटा गया है । अंक विभाजन दो खंडों में किए गए हैं । सभी इकाई महत्वपूर्ण है और सारे प्रश्न अनिवार्य होंगे ।

उद्देश्य

- सृजनात्मक चिंतन और लेखन क्षमता के साथ-साथ भाषिक क्षमता को विकसित कर पाएंगे ।
- लेखन, श्रवण और मौखिक अभिव्यक्ति की प्रभावी क्षमता विकसित हो सकेगी ।
- छात्रों की विचार क्षमता तथा कल्पनाशीलता की समझ होगी ।
- सृजनात्मक लेखन के विविध क्षेत्रों के महत्व तथा उपयोगिता से परिचित हो सकेंगे ।
- सृजनात्मक लेखन की विविध विधाओं (कविता, कहानी, यात्रावृत्त, साक्षात्कार आदि) से परिचित हो सकेंगे ।

विशेष उद्देश्य

- नूतन विषयों में लेखन के लिए छात्रों की रूचि को प्रेरित करते हुए उन्हें लेखन के माध्यम से समाज में परिवर्तन के लिए मानसिक वातावरण तैयार करने हेतु प्रोत्साहित कर सकेंगे ।
- इस पाठ्यक्र के माध्यम से छात्रों का मार्ग दर्शन करते हुए उनकी भीतरी रचनात्मक शक्ति को उजागर किया जा सकता है, यह वता पाएंगे ।
- नेपाल जैसे लोकतांत्रिक देश को नैतिक नेतृत्व की वहुत आवश्यकता है और इसे वनाने में सृजनात्मक लेखन का वहुत योगदान हो सकता है, यह वता पाएंगे ।

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ६५३-१ सृजनात्मक लेखन : अर्थ, परिभाषा, आवधारणा, क्षेत्र, महत्व, सिद्धान्त । सृजनात्मक लेखन के विभिन्न प्रकार । सृजनात्मक लेखन की अन्तर्वस्तु ।

इकाई २ (Unit 2)

हि ६५३-२ सृजनात्मक लेखन के तत्व । सृजनात्मक चिन्तन गुण (नवीनता एवं जटिलता में अभिरुचि, विचार की निरंतरता, मौलिकता का गुण, प्रवलता का गुण, तार्किक क्षमता) । सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करने हेतु विशेष तकनीक (मस्तिष्क उद्धलन विधि, समस्या समाधान विधि, सामूहिक चर्चा, सिनेटिक (भूमिका अदा करना आदि) । सृजनात्मक लेखन : भाव पक्ष एवं कला पक्ष ।

इकाई ३ (Unit 3)

हि ६५३-३ सृजनात्मक लेखन के विविध आयाम (कविता लेखन, गीत लेखन, लघुकथा लेखन, संक्षेपण लेखन, कहानी लेखन, सडक नाटक, लघु नाटक, यात्रावृत्त लेखन आदि) । कविता, गीत, लघुकथा, कहानी, संक्षेपण, यात्रावृत्त लेखन : स्वरुप, महत्व तथा उपयोगिता । अन्य विधाओं लेखन : स्वरुप, महत्व तथा उपयोगिता ।

इकाई ४ (Unit 4)

हि ६५३-४ स्क्रिप्ट लेखन (पटकथा लेखन) के आधारभूत तत्व । विज्ञापन लेखन । उदघोषण लेखन । फीचर लेखन । सम्पादकीय लेखन । समाचार लेखन । स्ववृत्त (वायोडेटा) लेखन । रोजगार सम्वन्धी आवेदन लेखन । सृजनात्मक लेखन और व्यक्तित्व निर्माण ।

पाठ्य पुस्तक

१. गोस्वामी, कृष्णकुमार, २०१८, व्यावहारिक हिन्दी और रचना, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।
२. गुप्ता, डा. दिनेश एवं डा. राम प्रकाश, २०२४, समाचार एवं प्रारुप लेखन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।
३. जयमोहन, एम.एस, २०१३, सृजनात्मक लेखन और संचार दक्षता, वाणी प्रकाशन ग्रुप, दिल्ली ।
४. मिश्र, राजेन्द्र, २०१५, सृजनात्मक लेखन, हिन्दी वुक सेन्टर, नई दिल्ली ।

सहायक पुस्तक

१. मेहेर, कुमार छविल,२०२३, कार्यालयी हिन्दी और हिन्दी कम्प्यूटिंग, अनन्या प्रकाशन, चेन्नई ।
२. जोशी, मनोहर श्याम,२०००, पटकथा लेखन : एक परिचय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
३. झा, अरविन्द,२०१३, पटकथा लेखन, हिन्दी वुक सेन्टर, नई दिल्ली ।
४. अरोरा, प्रो. हरिष,२०२३, सृजनात्मक लेखन के आयाम, श्रीनटराज प्रकाशन, दिल्ली ।
५. तिवारी, डॉ. भोलानाथ एवं कुलश्रेष्ठ, डॉ. विजय (१९९३), पत्र व्यवहार निर्देशिका, प्रकाशन, नई दिल्ली ।
६. प्रो. हरिमोहन, (२०२३), समाचार फीचर लेखन, एवं सम्पादन कला, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली ।
७. आर. पी. के., (२०१२), फीचर लेखन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ।

चतुर्थ सेमेस्टर

चतुर्थ पत्र

शोध दर्शन और शोध प्रविधि

संकेतांक हि ६५४ (HIN 654)

क्रेडिट आवर- ३
पाठ घंटा -४८

पाठ्यक्रम परिचय

एम. ए. के छात्रों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अनुसंधान की तकनीकी जानकारी से अवगत कराना ही इस पत्र का लक्ष्य है । अनुसंधान कौशल के विकास हेतु शोधप्रविधि का ज्ञान छात्रों के लिए आवश्यक है । इस पत्र के भी चार इकाई हैं और प्रश्न इन सभी से पूछे जाएँगे । सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे । अंक विभाजन दो खण्डों में किया गया है ।

उद्देश्य

- शोध प्रक्रिया का स्वरूप एवं उपयोजन की जानकारी देना ।
- शोध प्रक्रिया के विविध आयामों से परिचित कराना ।
- शोध प्रक्रिया के सन्दर्भ में आवश्यक तत्वों से अवगत कराना ।
- शोध कार्य करने की क्षमता का निर्माण कराना ।
- शोध सम्वन्धी समस्याओं से निपटने और सुलझाने की क्षमता का निर्माण कराना ।

विशेष उद्देश्य

- साहित्य का गहन ज्ञान और अपने स्वयं के अनुसंधान के लिए लागू वैज्ञानिक तरीकों और तकनीकों की व्यापक जानकारी दे सकेंगे ।
- शोध की क्षमता का निर्माण, शोध लेखन की समझ, शोध प्रस्तुति की क्षमता का निर्माण तथा विषय विश्लेषण की क्षमता का निर्माण कर पाएंगे ।
- वर्तमान अनुसंधान और अनुसंधान तकनीकों एवम् कार्यप्रणाली का गंभीर रूप से मूल्यांकन करने की क्षमता का विकास कर पाएंगे ।

विस्तृत पाठ्यक्रम

इकाई १ (Unit 1)

हि ६५४-१ : अनुसंधान की परिभाषा, स्वरूप और आवश्यकता अनुसंधान के मूल उपकरंण प्राक्कल्पना, परिभाषा, आत्त सामग्री, तथ्य एवं अन्वेषण, सिद्धान्त और नियम, योजना के लिए समय देना समस्याओं का चुनाव, समस्या के आवश्यक लक्षण ।

Faculty of Humanities & Social Sciences Dean's Office Kirtipur

इकाई २ (Unit 2)

हि ६५४-२ : योजना के लिए समय देना, समस्या के स्पृहणीय लक्षण । अनुसंधनात्मक अध्ययनों के लिए विचार ।

हि ६५४-३ : आत्त सामग्री की भाषा, समस्याओं की परिभाषा देने में व्यापकता एवं संकीर्णता के लाभ । समस्या का आरम्भिक अन्वेषण ।

हि ६५४-४: अनुसंधान कर्ता के गुण और शोध प्रवन्ध के विभिन्न अंगों का अध्ययन ।

भारतीय चिंतन परंपरा व शिक्षा दर्शन, दर्शन के पूर्वी एवं पश्चिमी सम्प्रदायों का तुलनात्मक अध्ययन ।

पाठ्य पुस्तक

१. डॉ. गणेशन, एस.एन (२००९), अनुसंधान प्रविधि सिद्धान्त और प्रक्रिया, लोक भारती प्रकाशन, इलाहावाद ।
२. सिंह, विजयपाल (हिन्दी अनुसंधान), लोक भारती, इलाहाबाद ।
३. सिंह, कन्हैया (हिन्दी पाठानुसंधान), लोक भारती, इलाहावाद ।
४. भारद्वाज, मैथिली प्रसाद (२००५), शोध प्रविधि, आधार प्रकाशन, पंचकुला ।

सहायक पुस्तक

१. सिन्हा, डॉ. सावित्री (१९५४), अनुसंधान का स्वरूप, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।
२. देवान, हृदयकान्त द्विवेदी, रजनी एण्ड शर्मा, गिरिस (सं) (२०२४), शोध आरम्भिक परिचय, रावत पव्लिकेशन्स ।
३. सिंहल, वैजनाथ (२०२३), शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।
४. कौल, लोकेश (२०२२), शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पव्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली ।
५. वर्मा, डॉ.हरिश्चन्द्र (२०२०), हरियाणा साहित्य अकादमी, हरियाणा ।
६. खत्री, हरीश कुमार, शोध प्रविधि, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल ।

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office

चतुर्थ सेमेस्टर

अनुसंधान

संकेतांक हि ६५५ (HIN 655)

क्रेडिट आवर- ६

पाठ घंटा- ९६

पाठ्यांश परिचय

यह पत्र अनुसंधान का पत्र है । १०० अंक के इस पत्र के अन्तर्गत छात्र को अपनी इच्छानुसार अनुसंधान के लिए किसी एक विषय का चयन करना होगा । शोध के लिए विषय के चुनाव में विभागीय प्रमुख की अनुमति आवश्यक होगी । अनुसंधान के लिए अंकों को तीन खण्डों में वाँटा गया है । अनुसन्धान के लिए पूर्णांक १०० होगा ।

अनुसंधान हेतु

खण्ड क : शोध लेखन : ७० अंक

खण्ड ख : वाह्य परीक्षक : २० अंक

खण्ड ग : अन्त: परीक्षक : १० अंक

उद्देश्य

- छात्रों के अध्ययन सम्वन्धी गुणवत्ता अभिवृद्धि तथा विषय को गहराई से समझने की क्षमता का विकास इस पत्र का उद्देश्य है ।
- शोधार्थी, शोध, उसके प्रमुख आयामों और महत्व को जान सकेंगे ।
- शोध कार्य की सही पद्धती से अवगत हो सकेंगे ।
- छात्रों को शोध का व्यवहारिक अभ्यास होगा ।

विशेष उद्देश्य

- छात्र हिन्दी में शोध के विभिन्न आयामों और उनमें कार्य करने की व्यापक सम्भावनाओं से परिचित हो सकेंगे ।

Faculty of Humanities & Social Sciences
Dean's Office